अंक: 134

# दक्षिण ध्वनि

दक्षिण रेलवे
मुख्यालय,राजभाषा संगठन,चेन्नै – 600 003.

## क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक - सहायक साहित्य का विमोचन

## राजभाषा उत्सव - अंतर विभागीय चल शील्ड

प्रथम पुरस्कार
सुरक्षा विभाग

द्वितीय पुरस्कार
परिचालन विभाग

तृतीय पुरस्कार
चिकित्सा विभाग

# दक्षिण ध्वनि

अंक: 134

(सर्वत्र गुंजायमान हो यह ध्वनि)

संरक्षक
आर.एन.सिंह
महाप्रबंधक

सह-संरक्षक
कौशल किशोर
अपर महाप्रबंधक

परामर्शदाता
पी.सुरेश
प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक
सहदेव सिंह पुरती
उप महाप्रबंधक,राजभाषा,मुख्यालय

सह-संपादक
डॉ.ए.श्रीनिवासन, राजभाषा अधिकारी
श्रीमती एन.चित्रा, वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय
श्रीमती वी.सुजाता, वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

अभिकल्प एवं प्रस्तुति
श्री एस.बालसुब्रमणियन, वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं।
इसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है।
(केवल सरकारी प्रयोग के लिए)

संपर्क पता - राजभाषा संगठन, दक्षिण रेलवे मुख्यालय

# भारत सरकार/Government of India
# रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
# दक्षिण रेलवे/Southern Railway

आर.एन.सिंह
महाप्रबंधक

महाप्रबंधक कार्यालय
Office of the General Manager
चेन्नै/Chennai - 600 003.

## संदेश

दक्षिण रेलवे मुख्यालय की ओर से गृह पत्रिका **"दक्षिण ध्वनि"** के 134वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है, जो कि अत्यंत हर्ष का विषय है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी भारतीय रेल कभी रुकती नहीं है, निरंतर गतिमान रहती है। इसी भावना से इस पत्रिका का प्रकाशन भी निरंतर हो रहा है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में दक्षिण रेलवे ने एक महत्वपूर्ण आयाम उपलब्ध किया है। पूरे देश में जहां कहीं भी रेल पहुंच रही है, वहां हिंदी भी उत्साह से पहुंच रही है। हिंदी दिलों में घर करने वाली भाषा है और इसी कारण यह विश्व में तृतीय स्थान रखती है।

इस पत्रिका का प्रकाशन लगातार बनाए रखने हेतु पत्रिका के लेखन और प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को बधाइयाँ।

नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित,

शुभेच्छु

(आर.एन. सिंह)

# भारत सरकार/Government of India
# रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
# दक्षिण रेलवे/Southern Railway

**कौशल किशोर**
**अपर महाप्रबंधक**

महाप्रबंधक कार्यालय
Office of the General Manager
चेन्नै/Chennai - 600 003.

## संदेश

दक्षिण रेलवे मुख्यालय की ओर से गृह पत्रिका **"दक्षिण ध्वनि"** के 134वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इसके प्रकाशन की निरंतरता इस बात का सबूत है कि यह लोकप्रिय है। इसके लेखक और पाठक एक दूसरे से करीबी से जुड़े हैं। एक दूसरे की भावनाओं का आदर-सम्मान करते हैं। इसकी रोचकता और उपादेयता बनी रहे, इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है। इस बात की कामना करते हैं कि इसके प्रकाशन की निरंतरता बनी रहे।

पत्रिका के संकलन, लेखन और प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारी एवं कर्मचारी विशेष साधुवाद के पात्र हैं।

**नव वर्ष 2024 की शुभकामनाएं....**

(कौशल किशोर)

# भारत सरकार/Government of India
# रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
# दक्षिण रेलवे/Southern Railway

मुख्यालय/ Headquarters Office
चेन्नै/Chennai - 600 003.

**पी.सुरेश**

**प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं**
**मुख्य राजभाषा अधिकारी**

## संदेश

दक्षिण रेलवे मुख्यालय की गृह पत्रिका **'दक्षिण ध्वनि'** का अगला अंक आपके हाथों में है। हर बार की तरह यह अंक भी अलग-अलग विषय वस्तुओं को लेकर आ रहा है। विश्वास है कि इसके पूर्ववर्ती अंकों की तरह ही आप सबको यह अंक पसंद आएगा।

इस पत्रिका के प्रकाशन को लगातार गतिमान रखने के लिए राजभाषा विभाग को बधाइयां तथा सभी पाठकों तथा लेखन और प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को **नव वर्ष 2024 की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।**

पी. सुरेश

भारत सरकार/Government of India
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway

मुख्यालय/ Headquarters Office
चेन्नै/Chennai - 600 003.

सहदेव सिंह पुरती
उप महाप्रबंधक,राजभाषा, मुख्यालय

## संपादकीय

**दक्षिण ध्वनि का 134 वां अंक** आप सबके हाथों तक पहुंचाते हुये बहुत खुशी हो रही है। आजकल ई-पुस्तकें और पत्रिकाएं बहुत लोकप्रिय हो रही हैं, क्योंकि इन्हें स्मार्ट मोबाइलों में भी अन्तरित किया जा सकता है और सहजता से पढ़ा जा सकता हैं। पिछली पत्रिकाओं को पाठकों द्वारा सहृदयता से पढ़ा गया और काफी सराहना मिली। हम आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास करते हैं, कि पत्रिका का यह नवीनतम अंक भी उसी तरह से स्वागत और स्वीकार किया जायेगा। यह वर्ष 2023 का अंतिम अंक है और हम आगे नववर्ष 2024 में प्रवेश करने जा रहे हैं। आजतक आप सभी हिन्दी प्रेमी अधिकारियों और कर्मचारियों ने राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए जो उत्साह दिखाया है, आइये इस नूतन वर्ष में हम सब दुगुने उत्साह से राजभाषा का प्रचार-प्रसार का प्रण लें और विविध भाषाओं में बँटे हुए अपने महान देश को एक शानदार, जानदार और शक्तिशाली तथा लोकप्रिय भाषा का उपहार दें। आप सबको नववर्ष 2024 के लिए हमारी ओर से बहुत-बहुत मंगलकामनाएं।

(सहदेव सिंह पुरती)

# विभिन्न प्रतियोगिताएं/कार्यक्रम - 2023

क्षेत्रीय प्रतियोगिता

टिप्पण व प्रारूप लेखन

पुस्तक समीक्षा

निबंध प्रतियोगिता

शब्द - शक्ति

वार्तालाप

हिंदी फिल्मी गायन

श्री पूर्णवासी प्रसाद, सहायक निदेशक/हिंदी (संसद) रेलवे बोर्ड द्वारा निरीक्षण

हिंदी कार्यशाला

क्षेत्रीय हिंदी नाट्योत्सव

रेलवे अस्पताल,पेरंबूर में संगोष्ठी

मुख्यालय द्वारा सेलम मंडल की सौजन्य में राजभाषा संगोष्ठी और सहायक साहित्य का विमोचन

# विषय-सूची


| क्र.सं. | विषय | लेखक का नाम श्री/सुश्री/श्रीमती | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1. | बच्चों में आज्ञाकारिता की घटती प्रवृत्ति | सहदेव सिंह पुरती | 1 |
| | किस काम का (कविता) | | |
| 2. | इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी | डॉ. ए. श्रीनिवासन | 4 |
| 3. | प्रबंधकीय निर्णयों में एक उपकरण के रूप में सांख्यिकी की प्रासंगिकता | के.आर.रमेश | 8 |
| 4. | सौंदर्य की नदी नर्मदा | धर्मराज मीणा | 10 |
| 5. | पीढ़ी दर पीढ़ी बढता विचारांतर | मोहन | 13 |
| 6. | ट्रेन डिटेक्शन प्रणाली | नागमणि कुमार | 15 |
| 7. | परीक्षाएं | संध्या पी भट्ट | 18 |
| 8. | बिहार का महापर्व 'छठ पूजा' | अभिषेक कुमार | 22 |
| 9. | राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत एक परिचय | विजय सिंह मीना | 23 |
| 10. | रानी की पहेली | सर्वेश कुमार निगम | 26 |
| 11. | बचपन (कविता) | हरिनंदन ठाकुर | 30 |
| 12. | असम | आर. इन्दुबाला | 31 |
| 13. | राजधानी की सैर | एम. गीता | 34 |
| 14. | दो मिनट में दक्षिण रेलवे का दीदार कराता हूँ (कविता) | विकाश कुमार शर्मा | 35 |
| | हमारा बिहार प्यारा बिहार (कविता) | | |
| 15. | स्वयं से करें प्यार तो जीवन में होंगे चमत्कार | वी. पूर्ण कामेश्वरी | 38 |
| 16. | डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी का बढ़ता खतरा | मनुशिवशंकर | 42 |
| 17. | विचारों का बिखराव | वी. जयश्री | 44 |
| 18. | दुनिया की सैर | एस. बालसुब्रमणियन | 45 |
| 19. | जयशंकर प्रसाद | एन.चित्रा | 47 |

# बच्चों में आज्ञाकारिता की घटती प्रवृत्ति

**सहदेव सिंह पुरती**
उप महाप्रबंधक, राजभाषा, मुख्यालय

कहा जाता है कि परिवर्तन ही अपरिवर्तित है। आजकल सब कुछ बदल गया है। सीखने - सिखाने की पद्धति बदल गई है । दुनिया को देखने का नजरिया बदल गया है। ऐसे में बच्चों का बड़ों या माता - पिता के प्रति आज्ञाकारी होना भी दुर्लभ होता जा रहा है। हालांकि, गांवों में यह गुण आज भी है। क्योंकि वहां की संस्कृति और जीवन को देखने का नजरिया अलग है। गांव में यदि कोई बड़े बूढ़ों की बातें या माता-पिता की बातें नहीं सुनता है, तो उसकी बहुत निंदा होती है। जिसकी निंदा की जा रही होती है, इस बात की सूचना उसके पास भी पहुंचती है। वह जान जाता है कि इस बात के लिए हमारी बहुत निंदा हो रही है। वहाँ बड़े पैमाने पर एक दूसरे से सांस्कृतिक और वैचारिक रूप से आपस में जुड़ाव होती है। एक गांव की चर्चा दूसरे गांवों में पहुंचती है। वे अपने तीज - त्यौहारों या पर्व-त्योहारों में और हाट - बाजार में एक दूसरे से मिलते जुलते रहते हैं। यहां आपसी विचारों का आदान - प्रदान ही नहीं होता, सभी तरह की अच्छी - बुरी बातों की चर्चाएं भी होती हैं। ऐसे में घर या गांव वाले जिसे गलत ठहरा रहे हैं, उनकी बातें गांव से बाहर समूची बिरादरी में फैल जाती हैं। लोग-बाग, उसके अपने परिचित और मित्र, उस व्यक्ति को यह भी सुनाते हैं कि हमने तुम्हारे विषय में ऐसा कुछ सुना है। इससे वह भरे बाजार में शर्मिंदा होता है तथा कोई भी गलत काम करने से डरता है।

शहरों की जिंदगी ही अलग किस्म की होती है। वहां किसी को किसी से तो क्या, अपने पड़ोसियों से भी कोई मतलब नहीं होता। उन्हें अपने किए गलत कार्यों और बातों का पूरे क्षेत्र में फैल जाने का डर नहीं होता। बात फैल भी जाए तो इससे दूसरों को कोई ज्यादा फर्क नहीं पड़ता।

एक जमाना था। बच्चे पाठशालाओं में पढ़ते थे। उनके सीखने - सिखाने का तरीका उन्मुक्त या खुला हुआ होता था। सवालों के जवाब वे अपनी इच्छा अनुसार, अपने पसंद के शब्दों में दे सकते थे। आज समय बदल गया है। बच्चों को सिखाया नहीं, बल्कि रटाया जाता है। बच्चे अब स्कूलों में सवालों के जवाब रटते हैं। उन्हीं बच्चों को ज्यादा अंक मिलते हैं, जो अपनी पुस्तकों में पूछे गए सवालों के जवाब, हू -ब -हू उन्हीं शब्दों में देते हैं, जैसा की पुस्तक में लिखा हुआ होता है। इस परिपाटी में वे एक विचारधारा के हो जाते हैं। बाहर क्या हो रहा है, क्यों और कैसे हो रहा है, इसमें उसका ध्यान नहीं रहता। बस अपना दिमाग वाक्य और शब्दों को रटने की ओर ही लगाये रहते हैं। आगे चलकर ऐसे बच्चे, वही सोचने और करने लगते हैं जिसे करने को उसका मन करता है। दूसरे क्या चाहते हैं, उनके लिए क्या अच्छा और बुरा है, वे तय नहीं कर पाते। रटंत शिक्षा होने के कारण उनका दृष्टिकोण इतना संकुचित हो जाता है कि दूसरों के सुख- दुख में वे स्वयं भागीदार बनना नहीं चाहते। उनका सुख - दुख उनका अपना होता है। उनकी विचारधारा, अपने तक ही सीमित रह जाती है। इस तरह से,

आज की शिक्षा पद्धति में, बच्चों को सिखाने की जो रटंत प्रणाली है, वह उन्हे अपने खुद तक, सीमित रहने की शिक्षा देती है। ऐसे बच्चों से बड़ों की आज्ञा का पालन करने की उम्मीद कम की रहती है। उन्हें, हम सफल होने का नजरिया सिखाते हैं, लेकिन संस्कार के बारे में नहीं बताते हें ।

जो बच्चा समाज के बीच सबसे मिलजुल कर रहता है, अपने पाठ के सार को समझता है, विभिन्न रूप में उसे व्यक्त करता, बताता है, उसका दृष्टिकोण थोड़ा व्यापक और विस्तृत होता है। खुले विचारों की वजह से, वह सबके सुख - दुख को समझता है और उसी से आज्ञाकारिता की उम्मीद भी की जा सकती है। पुस्तकों को सिर्फ रटने, सबको पछाडकर अकेले आगे बढ़ने की शिक्षा जिनको मिलती है वे बस अपने बारे में सोचने के आदि हो जाते हैं। फलस्वरुप उनमें आज्ञाकारिता की कमी हो जाती है। उन्हें व्यापक दृष्टिकोण के साथ सदभावपूर्ण, सामुहिक, सामाजिक व्यवहार की शिक्षा दी जानी चाहिए।

--

## किस काम का (कविता)

कहते हैं हर दर्द
की दवा है यहाँ
मानो न मानो जमाना
इसका गवाह है यहाँ
दरवाजा कोई भी यहाँ
स्थाई बंद नहीं रहता
खुल जाता है जो कोई
उसमें दस्तक दिये जाता।
जहाँ चाह होती है,
वहाँ राह होती है
सोने वालों की तो
सोती किस्मत भी रहती है
जो बढ़ते हैं, देखते-देखते
सामने से बढ़ जाते हैं
जो रुकते हैं वो तो
रुके वहीं रह जाते हैं ।
कोई-कोई संग्रह में
इतना रम जाता है
भूल जाता है जीना, बस
संग्रह में लगा रहता है।

जमीन से आसमान तक
सभ्यता का विकास है
कोई जमीन में है तो किसी का
आसमान तक विकास है

कहते हैं जीवन जिसको,
वह सोच का परिणाम है
आदमी बनता तो वही है,
जो वह सोचता स्वयम् है।
सोच बड़ी चीज है,
इस दुनिया में लोगो
यहाँ बढ़ता वही है,
जो ऊँचा सोचता है।
जहाँ बुराई का सवाल है,
सोच भी कर्म है
जहाँ बेहतरी की बात है,
मेहनत ही कर्म है।
बहुत बार भूल जाते हैं
लोग आदमी की कीमत
वस्त्र और हैसियत से आंकते हैं
आदमी की कीमत।
उठ जाती है हैसियत तो
पिछला भूल जाता है
साथ उठा बैठा आदमी का
चेहरा भूल जाता है।

परिवेश से कभी-कभी
आदमी बदल जाता है
छोड़ अपनों को वह खुद को
गैरों का बताता है।
मन से कोई अच्छा सोचे,
शायद हर कोई करता है
कर्म से कोई अच्छा करे,
कोई-कोई ही करता है।
जो अपनों को भुला दे,
वह हैसियत किस काम का
जो अपनों के काम न आया,
उसका बढ़ना किस काम का ?

# इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी

**डॉ. ए. श्रीनिवासन,**
राजभाषा अधिकारी, मुख्यालय

हिन्दी विद्वानों को विदित है कि "हिन्दी साहित्य का इतिहास" सर्वप्रथम **गार्सा द दासी** ने फ्रेंच में लिखा था। ग्रंथकार ने हिन्दी के अन्तर्गत उर्दू को भी सम्मिलित करके पुस्तक का आधा भाग उर्दू कवियों के लिए रखा था। इसके कुछ समय बाद, "शिवसिंह सरोज" (हिन्दी साहित्य का इतिहास) प्रकाशित हुआ, जिसमें कुछ अधिक कवि सम्मिलित हुए। इसके कुछ समय बाद (हिन्दी साहित्य का इतिहास) "मिश्रबन्धु विनोद" प्रकाशित हुआ। इसमें पाँच हज़ार कवियों की कविताओं का विश्लेषण है। इसके बाद हिन्दी साहित्य के इतिहास के बहुत से संस्करण प्रकाशित हुए।

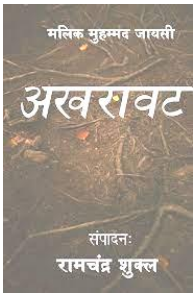

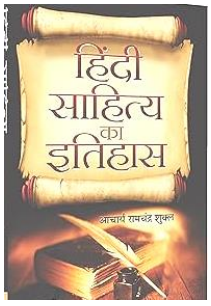

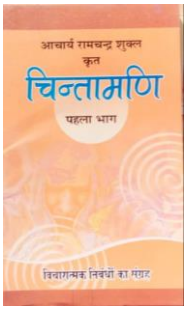

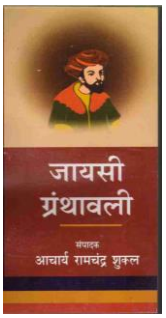


रामचन्द्र शुक्ल जी कृत "हिन्दी साहित्य का इतिहास" उन्नीस सौ उनतीस ई. में प्रकाशित हुआ जो निश्चित रूप से हिन्दी साहित्य के इतिहासों में मील का पत्थर था। जिन्होंने भी इसे पढ़ा है, अनुभव किया होगा कि शुक्लजी ने सारी बातों को प्रमाणों द्वारा पुष्ट किया है।

काशी विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए शुक्ल जी ने हिन्दी साहित्य के इतिहास की पुस्तक के अभाव का अनुभव किया। इसलिए उन्हें इस ग्रन्थ को जल्दी तैयार करना पड़ा। शायद इसी कारण से इसमें कुछ कवियों के नाम छूट गये है। उन्होंने स्वयं भूमिका में इसका उल्लेख किया है।|

इस बृहदाकार पुस्तक में सात सौ चौंतीस पृष्ट हैं। इसको उन्होंने चौबीस प्रकरणों में बांटा है। प्रथम प्रकरण में कालविभाजन है। इस प्रकरण के आरम्भ में उन्होंने एक प्रकार से साहित्य के इतिहास की परिभाषा की है। उन्होंने लिखा है "जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ, साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन ला देता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य कहलाता है।" हिन्दी साहित्य का कालविभाजन करते हुए उन्होंने लिखा है

वीरगाथाकाल - वि.सं 1050-1375 भक्तिकाल - वि.सं 1375-1700

रीतिकाल- वि.सं 1700-1900 आधुनिक काल (गद्यकाल) -1900 से

शुक्ल जी की इस कृति पर आपत्ति उठानेवाले आलोचक लिखते हैं कि 'साहित्य की कोई प्रवृत्ति किसी निश्चित वर्ष से समाप्त नहीं हो सकती।' इस तथ्य को शुक्ल जी ने भी स्वीकारा है। शुक्लजी के ही शब्दों में "यद्यपि इन कालों की रचनाओं की विशेष प्रवृत्ति के अनुसार ही इनका नामकरण किया गया है, पर यह न समझना चाहिए कि उन कालों में दूसरे प्रकार की रचनाएँ होती ही नहीं थीं। जैसे भक्तिकाल या रीतिकाल को लें तो उसमें वीर रस के अनेक काव्य मिलेंगे जिनमें वीर राजाओं की प्रशंसा उसी ढंग की है जो

वीरगाथाकाल में हुआ करती थी। अतः प्रत्येक काल का वर्णन इस प्रणाली के आधार पर किया जायगा जैसे 1. उक्त काल की विशेष प्रवृत्ति 2. उन रचनाओं का वर्णन होगा जो उस काल के लक्षण के अंतर्गत होंगे 3. उनके अतिरिक्त और प्रकार की ध्यान देने योग्य रचनाओं का संक्षेष में उल्लेख होगा । इसके अनुसार, उन्होंने हर एक प्रकरण में मुख्य प्रवृत्तियों के तथा मुख्य कवियों के विश्लेषण के बाद "फुटकर कवि" या "फुटकल रचनाएँ" शीर्षक से अन्य प्रवृत्तियों का तथा अन्य कवियों के कृतित्व का विश्लेषण किया है और क ने प्रचुर मात्रा में उद्धरण भी दिये हैं ।

इस संबंध में परवर्ती इतिहास लेखक डॉ.रामकुमार वर्माजी का मत दृष्टव्य है – "इसमें (इस पुस्तक में) कवियों की संख्या की अपेक्षा, कवियों के महत्त्व पर अधिक ध्यान दिया गया है। अभी तक लिखे हुए इतिहासों में इस इतिहास को सर्वश्रेष्ठ मानना चाहिए। इसमें हमें इतिहास के साथ, समालोचना और आधुनिक दृष्टिकोण से कवियों का निरूपण मिलता है। काव्यधाराओं का विवेचन जैसे इस इतिहास में है वैसा अन्यत्र नहीं।

डॉ.रामकुमार वर्मा के साथ स्वर मिलाकर, मैं भी कहता हूँ कि रामचन्द्र शुक्ल जी के "हिन्दी साहित्य का इतिहास" की वैज्ञानिकता स्वयंसिद्ध है । इसमें हिन्दी साहित्य की सभी ज्ञातव्य बातों का परिचय दिया गया है। लेखक ने उन्हें वैज्ञानिक रीति से समझाया और इस इतिहास में लेखक का अपना कोई निर्णय नहीं है ।"

शुक्लजी कृत "हिन्दी साहित्य का इतिहास" में बीस पृष्ठों में जैन, सिद्ध और नाथों की कृतियों को सोदाहरण और सप्रमाण समझाया है । इससे शुक्लजी की तीक्षण दृष्टि स्पष्ट होती है |

अट्ठाईस पृष्ठों में वीरगाथाकाल का विवेचन किया गया है । शुक्ल जी ने आरम्भ में ही लिखा है, वीरगाथाकाल नामकरण मुख्य प्रवृत्ति पर आधारित है । वीरगाथा काल के अन्तर्गत शुक्ल जी ने दो प्रकरणों को रखा है; एक **देश-भाषा काव्य** और दूसरा **फुटकर रचनाएँ**। "देश-भाषा काव्य" शीर्षक के अंतर्गत लेखक ने सामाजिक पृष्ठभूमि के साथ, खुमान रासो, बीसलदेव रासो, पृथ्वीराज रासो, मधुकर, जयचंद, जयमयंक, जयचन्द्रिका, आल्हाखण्ड, श्रीधर कृत रणमल्लछंद आदि का विश्लेषण किया है। इन देश-भाषा काव्यों का विश्लेषण करते समय भाषा का विकास दिखाना भूले नहीं। खुसरो और विद्यापति को उन्होंने फुटकर रचनाओं के अंतर्गत रखा है ।

भक्तिकाल के अन्तर्गत शुक्ल जी ने छः प्रकरण रखे हैं, एक सौ उनसठ पृष्ठों में इस काल का विवेचन है। इन छः प्रकरणों में प्रथम प्रकरण का शीर्षक है "सामन्त परिचय" । इसके अंतर्गत शुक्ल जी ने तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों का विवेचन किया है । इस प्रसंग में लेखक ने अपना मत भी लिखा है, "धर्म का प्रवाह, कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीन धाराओं में चलता है । इन तीनों के सामंजस्य से धर्म अपनी पूर्ण सजीव दशा में रहता है । किसी एक के अभाव से वह विकलांग रहता है । कर्म के बिना वह लूला – लंगडा, ज्ञान के बिना अंधा और भक्ति के बिना हृदय–विहीन, निष्प्राण रहता है।"

भक्तिकाल को शुक्ल जी ने चार शाखाओं में बाँटा है । ज्ञानाश्रायी शाखा के अन्तर्गत लेखक ने कबीर, दादुदयाल, गुरुनानक, धर्मदास, रविदास, सुन्दरदास आदि को रखा है । हर एक कवि के काव्यों के भावगत एवं शिल्पगत विशेषताओं का विश्लेषण किया है और प्रचुर उद्धरण भी दिए हैं |

प्रेममार्गी शाखा के अन्तर्गत कुतबन, मंझन, मलिक मुहम्मद जायसी, उस्मान, शेख नयी कासिम शाह आदि की कृतियों का विश्लेषण किया है । मृगवती, चित्रावली और पद्मावत की कथाओं को भी संक्षेप में लिखा है । दार्शनिकता, भावभूमि एंव शिल्प पर विस्तार से लिखा है ।

सगुण धारा के अंतर्गत पहले राम भक्ति शाखा का विवेचन किया है । इसके प्रारंभ में रामानन्द और राघवानन्द पर कुछ विस्तार से लिखा है। साथ-साथ तत्कालीन धार्मिक परिस्थिति की भी चर्चा की है। शुक्ल जी ने गोस्वामी तुलसीदास पर इक्कीस पृष्ठों में विवेचना की है । उन्होंने तुलसीदास का जन्म स्थान राजापुर ही माना है, न कि सोरो । तुलसी की बारह रचनाओं को ही लेखक ने प्रमाणिक माना है । कलिधर्माधर्म निरूपण को भी इन्होंने तुलसी कृत नहीं माना है । तुलसी की भाषा से उदाहरण देकर शुक्ल जी ने यह सिद्ध किया है कि तुलसी पूर्वी उत्तर प्रदेश के निवासी थे और अवधी उनकी मातृभाषा थी । अधिकांश आलोचकों ने तुलसीदास को रामानंद के शिष्य परम्परा में रखा है । परन्तु शुक्ल जी ने रामानन्द परम्परा पर प्राप्त संपूर्ण लिखित सामग्री के आधार पर निष्कर्ष निकाला है कि "उक्त संप्रदाय के अन्तर्गत जितनी शिष्य परंपराएँ मानी जाती हैं, उनमें तुलसीदासजी का नाम कहीं नहीं है। रामानंद परंपरा में सम्मिलित करने के लिए उन्हें नरहरिहारा का शिष्य मानकर जो परंपरा मिलाई गयी है, वह कल्पित प्रतीत होती है। वे रामोपासक वैष्णव अवश्य थे, पर स्मार्थ वैष्णव थे ।" इससे शुक्ल जी की सतत कार्यशील शोध – प्रवृत्रि का पता चलता है |

गोस्वामीजी के प्रादुर्भाव को हिन्दी काव्य के क्षेत्र में एक चमत्कार मानना चाहिए। हिन्दी काव्य की शक्ति का पूर्ण प्रसार इनकी रचनाओं में ही पहले पहल दिखाई पड़ा । " इसको पढ़ने पर मुझे अनायास ही इलियट की वह पंक्ति याद आती है, "A classical poet exhausts the language of his time."

कई आलोचक शुक्ल जी पर यह आरोप करते हैं कि उन्होंने पक्षपात किया है, अपने प्रदेश के होने के कारण तुलसी की अधिक प्रशंसा की है, जबकि, सूरदास की उतनी प्रशंसा नहीं की । यह निराधार आरोप है । "हिन्दी साहित्य का इतिहास" के एक सौ चौंसठवें पृष्ट पर उन्होंने लिखा है, "यद्यपि तुलसी के समान सूर का काव्यक्षेत्र इतना व्यापक नहीं कि उसमें जीवन की भिन्न-भिन्न दशाओं का समावेश हो, पर जिस पुण्यभूमि में उनकी वाणी ने संचरण किया, उसका कोई कोना अछूता न छोड़ा। श्रद्धा और वात्सल्य के क्षेत्र में जहाँ तक उनकी दृष्टि पहुँची, वहाँ तक और किसी कवि की दृष्टि नहीं पहुंची है। इन दोनों क्षेत्रों में तो इस महाकवि ने (सूरदास) मानों औरों के लिए कुछ छोड़ा नहीं। गोस्वामी तुलसीदासजी ने गीतावली में बाल-लीला को इनकी देखादेखी बहुत अधिक विस्तार दिया सही, पर उसमें बाल-सुलभ भावों की और चेष्टाओं की वह प्रचुरता नहीं ।" अपने इस कथन की पृष्टि में शुक्ल जी ने बहुत उद्धरण दिये हैं । सूर के भ्रमरगीत के संबंध में शुक्ल जी ने लिखा है, "ऐसा सुंदर उपालम्ब काव्य और कहीं नहीं मिलता ।" लेखक ने तुलसीदास के बाद, रामभक्ति शाखा में स्वामी अग्रदास, नाभादास, प्राणचन्द चौहान और हृदयराम के कृतित्व का विश्लेषण किया है ।

कृष्णभक्ति शाखा के अन्तर्गत वल्लभाचार्य की जीवनी, कृतित्व और दर्शन का विवेचन किया है। इसके बाद सूरदास की जीवनी तथा उनके कृतित्व का विस्तृत विश्लेषण किया है। इसी प्रकरण के अन्तर्गत रामचन्द्र शुक्लजी ने अष्टछाप के अन्य कवि, मीराभाई, व्यास, गदाधर भट्ट, ध्रुवदास आदि के कृतित्वों का सोदाहरण विवेचन किया है । इसके बाद "भक्तिकाल की फुटकर रचनाएँ" प्रकरण के अन्तर्गत बाईस कवियों के कृतित्व का विश्लेषण किया है । इनमें से केशवदास, सेनापति और नरोत्तमदास हैं । इस प्रकरण के अन्त में मुख्य आख्यान काव्यों की तालिका भी दी गयी है जिसमें कुछ राजस्थानी काव्य भी सम्मिलित हैं ।

इसके पश्चात रीतिकाल को लिया है शुक्लजी ने। इसमें भी प्रथम प्रकरण में "सामान्य परिचय" है। उसमें राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक पृष्टभूमि संक्षेप में दी गयी है। इस काल के नामकरण में भी बहुत मतभेद हैं। परन्तु जैसे भूमिका में ही लिखा है, शुक्लजी ने मुख्य प्रवृत्ति के आधार पर ही नामकरण किया है, जो अत्यन्त समीचीन है । रीतिकालीन वस्तु के संबंध में शुकल्जी का मत द्रष्टव्य है - "काव्य के स्वरूप और अंगों के संबंध में हिन्दी के रीतिकाल कवियों ने संस्कृत के इन परवर्ती ग्रंथों का मत ग्रहण किया। " इस प्रकार दैवयोग से संस्कृत साहित्य – भास के इतिहास की एक संक्षित उद्धरण हिन्दी में हो गई।" इससे आसानी से यह कल्पना की जा सकती है कि रीति काव्य का विश्लेषण कितना कठिन है । जिस आलोचक का काव्यालंकार पर अधिकार है वही रीतिकालीन काव्य का सही विश्लेषण कर सकता है । शुक्ल जी ने इस काल के कवियों को तीन वर्गों में रखा है – रीतिग्रंथकार कवि, रीतिबद्ध कवि और रीतिमुक्त कवि । यह वर्गीकरण अत्यन्त समीचीन एंव वैज्ञानिक है । रीतिग्रंथकार कवियों के अन्तर्गत लेखक ने सत्तावन कवियों के कृतित्व का विशलेषण किया है । इससे लेखक की तटस्थता और शोधपरक दृष्टिकोण व्यक्त होते हैं । रीतिबद्ध कवियों को भी लेखक ने "रीतिग्रंथकार कवि" के प्रकरण में रखा है। जिन कवियों की कविताएँ अधिक प्रभावोत्पादक हैं, उनका विश्लेषण विस्तार से किया गया है । बीच-बीच में शुक्लजी ने अपना मत व्यक्त किया है, जैसे "यदि प्रबंध काव्य " एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है ।" आलोचना में उनकी पैनी दृष्टि का एक उदाहरण देता हूँ – "जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति जितनी ही अधिक होगी उतना ही वह मुक्तक रचना में सफल होगा । यह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप से विद्यमान थी । इसी से वे दोहे जैसी छन्द में इतना रस भर सके हैं। इनके दोहे क्या हैं, रस के छोटे-छोटे बूंद हैं ।" शुक्लजी की यह उक्ति हिन्दी साहित्य जगत में आर्ष वाक्य बन गयी।

इसके बाद का प्रकरण है, "रीतिकाल के अन्य कवि । " इसके अंतर्गत लेखक ने छियालिस कवियों को रखा है और यह प्रकरण तिहत्तर पृष्टों का है । इसमें रीतिमुक्त कवियों की कृतियों का विवेचन है। इस प्रकरण में लेखक ने रीतिमुक्त कवियों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। शुक्लजी के ही शब्दों में " यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि भाषा पर अचूक अधिकार जैसा इनका था वैसा और किसी कवि का नहीं ।" जहाँ भी अपना मत व्यक्त करना हो, लेखक ने निडर होकर, सबल शब्दों में व्यक्त किया है ।

आधुनिक काल का विवेचन अपने आप में एक बृहत लेख होगा। रामचन्द्र शुक्ल जी हिन्दी साहित्य के लिए एक वरदान हैं।

---

# प्रबंधकीय निर्णयों में एक उपकरण के रूप में सांख्यिकी की प्रासंगिकता

**के.आर.रमेश**
वरिष्ठ सांख्यिकी एवं विश्लेषण अधिकारी, मुख्यालय

सांख्यिकी डेटा का अध्ययन, डाटा को इकट्ठा करने, दस्तावेजीकरण करने, समीक्षा करने, विश्लेषण करने और निष्कर्ष निकालने पर अधारित है। सांख्यिकी वह प्रक्रिया होती है जिसे डेटा एकत्र करने, उन्हें व्यवस्थित करने और उनकी व्याख्या करने और अंततः उनसे निष्कर्ष निकालने के लिए प्रयोग की जाती है।

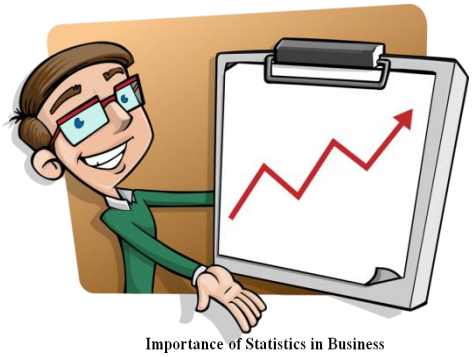
Importance of Statistics in Business

प्रबंधकीय निर्णयों में एक उपकरण के रूप में सांख्यिकी की प्रासंगिकता के बारे में सात प्वाइंटों (Seven Steps) का उल्लेख किया जा सकता है। वे इस प्रकार है:-

- आपको जो करना है, पहले आप उसे निर्धारित करें...
- प्रासंगिक जानकारी की समीक्षा करें. ...
- संभावित विकल्पों के बारे में सोचें. ...
- अपने पक्ष की प्वाइंटों पर विचार करें. ...
- समाधान चुनें. ...
- कार्यवाही करें। ...
- अपने निर्णय पर विचार करें.

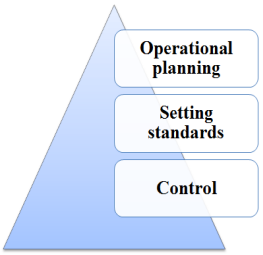


हमें सांख्यिकी निर्णय क्यों लेना है इस संबंध में विचार करने पर हमारे मन में यह प्रश्न उठता है कि "निर्णय लेने में सांख्यिकी क्यों महत्वपूर्ण है?" इसके उत्तर में कहा जा सकता है कि किसी भी व्यवसाय या संगठन की सफलता के लिए प्रभावी निर्णय लेना महत्वपूर्ण है।

सबसे तेजी से बढ़ते व्यवसायों में से एक के रूप में, कुशल सांख्यिकीविदों की मांग आजकल बहुत बढ़ रही है क्योंकि व्यवसाय अपनी रणनीति में सुधार करना चाहता है। इसके कारण सांख्यिकी के साथ-साथ उससे जुड़े अन्य क्षेत्रों को भी बढ़ावा मिल रही है।

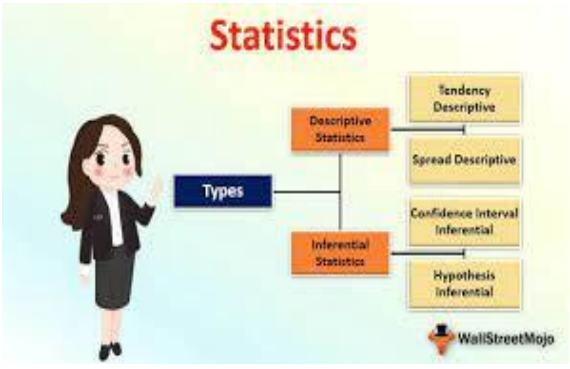


प्रबंधकीय निर्णय लेने में सांख्यिकी की भूमिका इस प्रकार है कि सांख्यिकी हमें संख्यात्मक मानक स्थापित करने और हमारी नीति या कार्यक्रम की प्रगति की निगरानी और मूल्यांकन करने में सक्षम बनाती है। इस प्रकार हमें निर्णय लेने की प्रक्रिया में भी सहायता मिल सकती है। साथ-साथ यह सुनिश्चित करने की भी आवश्यकता होती है कि नीतियां प्रारंभिक लक्ष्यों को पूरा कर रही हैं और उन क्षेत्रों की पहचान कर रही हैं जिनमें सुधार की आवश्यकता है।

**सांख्यिकी के प्रमुख लाभः**

1. यह दीर्घकालिक निर्णय लेने में मदद करती है
2. यह आवश्यक अंतर्दृष्टि मुहैया कराती है
3. यह विश्वसनीय जानकारी उपलब्ध कराती है

बड़े डेटा (Big Data) के युग में सांख्यिकी का महत्व पहले से कहीं अधिक है। आँकड़ों तक पहुँचना और उनका उपयोग करना निर्णय लेने में एक महत्वपूर्ण संपत्ति है, खासकर ऐसे समय में जब पहले से कहीं अधिक डेटा का महत्व एवं आवश्यकता बढ़ रही है। प्रभावी नेतृत्व के लिए सीखने, पढ़ने और भविष्य के लिए अनुकूलन करने की आवश्यकता होती है। ऐसे समय में विशेष रूप से जब उपलब्ध डेटा का तेजी से विस्तार हो रहा है, व्यवसायों और संगठनों को अपनी सफलता से संबंधित आँकड़े एकत्र करने, उनका विश्लेषण करने और सही तरीके से उनका उपयोग करने के लिए तैयार रहना चाहिए। व्यवसायों और संगठनों के प्रमुखों को आजकल एक के बाद एक निर्णय लेने हेतु काम सौंपे जाते हैं और ऐसे में विचार करने और निर्णय लेने के लिए अधिक जानकारी की आवश्यकता होती है जो सांख्यिकी के माध्यम से संभव हो रहा है।

सांख्यिकीय विश्लेषण किसी व्यवसाय या संगठन के अतीत को समझने और भविष्य के निर्माण दोनों की सफलता के लिए प्रासंगिक पैटर्न और अन्य वास्तविकताओं की पहचान करने के लिए डेटा के खंडों को इकट्ठा करने और समझने में सक्षम बनाता है।

सांख्यिकीय आँकड़े निर्णय लेने में क्यों महत्वपूर्ण हैं, इसका सबसे प्रमुख कारण यह है कि इससे हमें भविष्य की झलक मिल सकती है। यद्यपि सभी पूर्वानुमान प्रयास की अपनी सीमाएं होती हैं, फिर भी सांख्यिकीय विश्लेषण से निर्णय लेने वालों के लिए भविष्य की घटनाओं और रुझानों के बारे में सही मायने में सूचित धारणाओं तक पहुंचने में सहायता मिलती है।

सटीक डेटा संग्रह से प्राप्त वर्तमान और पिछले आँकड़ों का उपयोग करते हुए भविष्य के रुझानों और प्रत्याशित परिणामों के बारे में पूर्वानुमान लगाया जा सकता है जो सांख्यिकीय एल्गोरिदम और मशीन लर्निंग (या कृत्रिम बुद्धिमत्ता) के माध्यम से संभव है। हालाँकि, इस प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से नियोजित करने के लिए सांख्यिकीविदों की आवश्यकता होती है जो सटीक डेटा इकट्ठा करने और परिणामों की व्याख्या करने में मददगार साबित हो सकते हैं। अनुमानित आँकड़े आपको एक्सट्रापोलेशन के आधार पर निष्कर्ष निकालने में मदद करते हैं जो प्रायः कई मामलों में सही साबित होता है।

इस प्रकार सांख्यिकी प्रबंधन, विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

# 'सौंदर्य की नदी नर्मदा'

**धर्मराज मीणा**
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/डिज़ाइन एवं विकास,
इंजीनियरी विभाग, मुख्यालय

**यात्रा वृतांत** पढ़ना कुछ हद तक उस स्थिति में तृप्ति दायक है जब यात्राएं करना किसी वजह से संभव न हों। पढ़ते वक्त शारीरिक न सही पर मानसिक रूप से लेखक के साथ पाठक भी यात्रा तो कर ही रहा होता है। 'सौंदर्य की नदी नर्मदा' ऐसा ही एक यात्रा वृतांत है, जिसमें अमृतलाल वेगड़ मध्य और पश्चिम भारत को सींचने वाली हिमालय से भी पुरानी नदी नर्मदा के तट की परिक्रमा पर ले जाते हैं। मन और कर्म से कलाकार वेगड़ जी ने नमर्दा के अनुपम सौंदर्य का चित्र शब्दों के जरिए खीचा है। किस तरह नर्मदा ने अपने जल से पत्थरों कों हजारों वर्ष में तराश कर मॉर्डन शिल्प में बदल दिया है, खिले हुए फूल की तरह झरने, सब कुछ उन्होंने रंग और ब्रुश के बजाय कलम से चित्रित किया है। एक और बात, यह वृतांत नमर्दा के स्थूल सौंदर्य का वर्णन मात्र नहीं है, बल्कि इसमें सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण भी किया गया है।

वेगड़ जी के यात्रा वृतांत से पहले तो किताब शुरू करते ही उसकी भूमिका का रसास्वादन मिलता है। मोहनलाल वाजपेयी जी ने क्या खूबसूरत भूमिका लिखी है। वे भूमिका में लिखते हैं, विचित्र नहीं यदि ऐसी अद्वितीया, पुण्यात्मा, शिव की आनंद विधायिनी, सार्थक नाम्ना श्रोतवाहिनी की परिक्रमा करने केलिए युग-युग से पुण्यार्थी लालायित रहते हैं। और तो किसी नदी की परिक्रमा नहीं की जाती। वे पूछते हैं कि वह कौन  सी अदम्य प्ररेणा है जो निपट घरेलू स्वाभाव के अमृतलाल को घर में स्थिर नहीं रहने देती। उन्हें बार बार घर से बाहर खींच लाती है ? आगे फिर जवाब भी देते हैं कि रवींद्रनाथ ने अपने एक ही गीत में एक ही विशेष्य के लिए तीन विशेषणों का इस्तेमाल किया है- साधक, प्रेमी और पागल। इनमें से दो को सदा ही समानार्थी माना गया है पर तीसरा भी पांत से बाहर नहीं है। तीनों एक दूसरे का हाथ थामकर ऐसे चलते हें मानों तीनों तीन नहीं एक ही हों। अमृतलाल ऐसे ही अर्थ में नर्मदा के साधक हैं, उनकी साधना का मूल मंत्र प्रेम है। वे नर्मदा से विछोह सहन नहीं कर पाते हैं। नर्मदा की अंगुली पकड़े रहने के लिए दुरुह शूलपाणि की झाड़ियां और जेठ की दुपहरी में तपकर लाल हुई नर्मदा घाटी की चट्टानों से झुलसने के बाद भी हार नहीं मानते।

अमृतलाल जी की यह यात्रा जबलपुर से शुरू होती है। पूरे वृतांत में पौराणिक कथाओं के माध्यम से लोक संस्कृति का जीवंत वर्णन किया गया है। वे नर्मदा के सौंदर्य को नई निगाह से परखते हैं। उनकी सौंदर्य दृष्टि इतनी विस्तृत है कि उसमें नदी के किनारों पर बसे गांवों और उनकीजीवन शैली तक समाहित हो गई है। यात्रा की एकदम शुरुआत में ही छतरपुर में वे एक मिट्टी के घर पर बेलबूटे बनाते देखते हैं तो उनका मन बरबस ही उसकी ओर खिंच जाता है। इसी तरह मंडला में नर्मदा की कगार पर बैठे कृषक पति पत्नी खेत में चप्पल पहनकर घुसना नहीं चाहते हैं , उनकी झलक दिखायी गई है। यह भारतीय लोक जीवन का

एक आइना है। जहां खेत महज जमीन का एक टुकड़ा नहीं है। यात्रा के समय भरपूर हास परिहास करते हैं। एक स्कूल में रात को रुकने पर सहयात्री पांडे जी कहते हैं कि बघेरा आएगा तो पहले आपको ही शिकार बनाएगा, इस पर वेगड जी कहते हैं कि बहुत दुबला हूं, बेचारे का प्रथम ग्रासे मक्षिकापात होगा। पर हां तुम्हारे पास आएगा तो मधुरेण समापयेत होगा।रूपक ओर उत्प्रेक्षा का प्रयोग तो ऐसे करते हैं जैसे वे बिन बुलाए मेहमान हों। वे एक सुबह के बारे में लिखते हैं, 'सुबह नारंगी रंग का बड़ा भारी सूरज निकला। निकला नहीं उगा, पौधा जैसे धरती में से उगता है। ताजा जन्मा सूरज नवजात शिशु सा नर्म और कोमल लग रहा था।' इसी तरह नदी के अर्ध चंद्राकार की घुमाव पर बसे मंडला की तुलना कान के कुंडल से करते हैं। वे कुछ यों लिखते हैं, अमरकंटक से चलने के बाद नर्मदा डिंडौरी से सीधे जबलपुर आने के बजाए दक्षिण की ओर एक बड़ा लपेटा लगाती है। इसी अर्ध चंद्राकार के मध्य में है मंडलामानों नर्मदा के कान कुंडल में बसा है।

नदी के पानी को देखकर वे ध्यानमग्न हो जाते हैं, जिस तरह नर्मदा की निर्मल, धवल धार प्रवाहित होती है, उसी तरह विचारों का झोंका भी वेगड़ जी के मन-मस्तिष्क में उठता है। पानी को देखकर वे कहते हैं, अजीब है यह पानी। इसका अपना कोई रंग नहीं है, पर इंद्रधनुष के समस्त रंगों को धारण कर सकता है। इसका अपना कोई आकार नहीं है। पर असंख्य आकार ग्रहण कर सकता है। इसकी कोई आवाज नहीं है पर वाचाल हो उठता है तो इसका भयंकर वज्र निनाद दूर-दूर तक गूंज उठता है। गतिविहीन है पर गतिमान होने पर तीव्र वेग धारण करता है और उन्मत्त शक्ति और अपार ऊर्जा का स्रोत बन जाता है। उसके शांत रूप को देखकर हम ध्यानावस्थित हो उठते हैं तो उग्र रूप को देखकर भयाक्रांत। जीवनदायिनी वर्षा के रूप में वरदान बनकर आता है तो विनाशकारी बाढ़ बनकर प्रचंड तांडव भी करता है। अजीब है यह पानी। वेगड़ जी की निगाह प्रपात के ऐश्वर्य को देखती है, नदी की धारा के गुण को देखती है। उनकी निगाह में नर्मदा एक नदी, जीवित शख्सियत है। जो हज़ारों-हज़ार वर्षों से अपने प्रवाह में जीवन को रूपायित और आलोकित करती आई है।

उन्हें इस बात की भी फिक्र है कि अगले 25 साल में इस नदी का सौंदर्य क्षीण हो जाएगा। बांध बनाए जाने के बाद इसके किनारे डूब जाएंगे। हालांकि उन्हें लगता है कि इससे सूखे और तड़के खेतोंको पानी मिलेगा। और धरती लहलहा उठेगी। शायद वे कॉर्पोरेट कुचक्र को नहीं समझते थे। समझते होते तो बांधों को इतनी उम्मीदों भरी निगाह से नहीं देखते। उन्होंने नर्मदा की धारा के साथ जीवन पाते - जीव, वनस्पति, प्रकृति, खेत, पक्षी, इंसान सभी को इसमें गूँथा है। वे बताते हैं कि किस तरह नदी महज एक जल संसाधन नहींबल्कि मनुष्य के जीवन से मृत्यु तक का मूल आधार है। इसकी रेतभी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी जल धारा और इसमें मछली भी उतनी ही अनिवार्य है जितना उसके तट पर आने वाले मवेशियों के खुरों से धरती का मंथना।

अध्याय 13 में वे लिखते हैं, **"नर्मदा तट के छोटे-से-छोटे तृण और छोटे-से-छोटे कण न जाने कितने परव्राजकों, ऋषि-मुनियों और साधु-सन्तों की पदधूलि से पावन हुए होंगे। यहां के वनों में अनगिनत ऋषियों के आलम रहे होंगे। वहाँ उन्होंने धर्म पर विचार किया होगा, जीवन मूल्यों की खोज की होगी और संस्कृति का उजाला फैलाया होगा। हमारी संस्कृति आरण्यक संस्कृति रही। लेकिन अब? हमने उन पावन वनों को काट डाला है और पशु-पक्षियों को खदेड़ दिया है या मार डाला है। धरती के साथ यह कैसा विश्वासघात है।"**

पूरी नर्मदा यात्रा के दौरान एक और भी खास बात देखने को मिलती है। शुरुआत में नदी चंचल और तीव्र है, किसी बच्चे की तरह। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ती है प्रौढ़ व्यक्ति की तरह उसकी प्रवृत्ति हो जाती है, आखिर में एक बुजुर्ग की तरह शांत चित्त होकर बहती है समुद्र के पास पहुंचने पर। शुरुआत में उसका जीवन काफी आसान होता है और मध्य में वह निर्जन वनों में, शूलपाणेश्वर की झाड़ियों वाले मैदान में बहती है। जैसे जैसे वह आगे बढ़ती है उसके चित्त में शांति आती जाती है, लेकिन वह विशाल होती चली जाती है। यही जीवन है। कबीर बड़ से विमलेश्वर की यात्रा वाले पाठ में वेगड़ जी कहते भी हैं कि यही जीवन है, ज्यों ज्यों जीवन का सूर्यास्त निकट आता है, अधिकांश चीजें छूटती जाती हैं और यात्री अंतिम यात्रा के लिए हल्का फुल्का हो जाता है। वे कहते हैं कि कबीरबड़ पहुंचते- पहुंचते नर्मदा बोलने कम और सुनने ज्यादा लगती है।

वन विहार छूट गया, उसका लुकाछिपी का खेल बंद हो गया। यहां तक कि जिससे वह बनी है, पानी, चट्टान, प्रपात, शोर और मोड़। एक-एक कर सब छूटते जाते हैं।
लगभग आखिर में उन्होंने बड़ी ही खूबसूरत और विचार में डूबी हुई कविता के साथ यह यात्रा समाप्त करते हैं। यह तुलना है, समुद्र और मनुष्य की। कहते हैं न आदमी तो है ही पानी का बुलबुला, बस उसे ही कुछ अलहदा अंदाज में लिखा है-

**पृथ्वी पर तीन भाग जलऔर एक भाग थल है। हमारे शरीर में तीन भाग जल और एक भाग हड्डी है। बिल्कुल इसी अनुपात में हमारा हृदय धड़कता है, समुद्र गरजता है, समुद्र का गर्जन कहीं धरती के हृदय की धड़कन तो नहीं !माना कि समुद्र का पानी खारा है पर हमें तो वह मीठा पानी ही देता है! बादल से खारा पानी तो नहीं बरसता! शबरी की तरह चख-चखकर हमें तोवह मीठे बेर ही देता है! समुद्र , शबरी, धरती राम जुग-जुग की कहानी अविराम!**

सचमुच इस पुस्तक को पढ़कर मुझे अद्भुत आनंद का एहसास हुआ और भी कई किताबें पढ़ने हेतु मन लालायित है। आशा है कि भविष्य में मैं अपनी इस इच्छा को पूरा करूंगा।

******

# पीढ़ी दर पीढ़ी बढता विचारांतर

**मोहन,**
वरिष्ठ अनुवादक
डीजल लोको शेड, ईरोड

जैसे-जैसे मनुष्य ने समय के साथ अपनी आवश्यकताओं को बदला है वैसे ही विचारों का अंतर भी बढ़ा है। विभिन्न पीढ़ियों के बीच बढ़ रहे इस अंतर को जनरेशन गैप कहा जाता है। यह विचारांतर एक प्राकृतिक क्रिया है। इस दिशा में किए गए अध्ययनों से पता चला है कि एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से अलग क्यों है? ऐसा कुछ है जो स्वाभाविक रूप से उनमें आता है और यह एक तरह से एक अच्छी बात भी है क्योंकि इस तरह से मानव प्रजाति विकसित हो रही है।सत्तरके दशक में जनरेशन गैप के अंतर के सिद्धांत के अनुसार नवीन उपज यानी कि युवा पीढ़ी हमेशा पुरानी पीढ़ियों के विचारों, दृष्टिकोणों और विश्वासों पर सवाल उठाती और चुनौती देती हैं।

**पीढ़ियों का वर्गीकरण–**अधिकतरऐसा देखा गया है कि अलग-अलग स्थिति में विभिन्न पीढ़ी के लोग अलग-अलग तरह से व्यवहार करते हैं। प्रत्येक बार नयी पीढ़ी की उपज ने अपनी पुरानी पीढ़ी के कार्य करने की क्षमता को उबाऊ एवं नकारा श्रेणी का बताकर उसका उपहास उड़ाया है । प्राचीन और वर्तमान मानव जीवन-शैली एवं उनके दृष्टिकोण, विश्वास, विचार और सभी मान्यताओं के आधार पर पीढ़ियों को विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ रहे इस विचारान्तर पर हम स्वतंत्रता के बाद से लेकर वर्तमान में जी रही पीढ़ी तक के लिए विचार करते हैं ।

**1946 से पहले जन्में-**परंपरावादीपीढ़ी में लोगों के उस समूह केलोग आते हैं जो 1946 से पहले पैदा हुए थे और अभी 70 साल से ऊपर हैं। ऐसा कहा जाता है कि ये लोग आदेशों का अच्छी तरह से पालन करते हैं और कुशलता से काम करके संतुष्ट हो जाते हैं। इस पीढ़ी में वे लोग आते हैं जिन्होंने जीवन भर एक ही कुर्सी पर बैठकर अपना पूरा जीवन बिताया है या बिता रहे हैं । इस जनरेशन के लोग युवा पीढ़ियों के साथ अपने अनुभवों को बांटना पसंद करते हैं और ऐसे लोगों के आस-पास होना पसंद करते हैं जो उनके ज्ञान और अनुभव की सराहना करते हैं। वे अपने अधिकारी के प्रति वफादार होने के लिए जाने जाते हैं। इनमें से ज्यादातर लोगों ने एक ही संगठन के लिए अपना पूरा जीवन व्यतीत किया है और उस संगठन के प्रति बहुत ही वफादार रहते हैं।

**1946 और 1965 के बीच जन्में-** 1946 और 1965 के बीच जन्में इस पीढ़ी के लोग कड़ी मेहनत करने वाले हैं लेकिन ज्यादातर फीडबैक से परिचित नहीं हैं। उन्हें पुरस्कार के रूप में पैसा और प्रचार भी चाहिए। चूंकि इनमें से अधिकतर ऐशो-आराम से नहीं जिए इसलिए वे सुनिश्चित करते हैं कि उनके बच्चों को वह सब कुछ मिले जो वे चाहते हैं। वे चाहते हैं कि उनकी सराहना की जाए। वे चाहते हैं कि उनके अधिकारी और बच्चे यह समझे कि वे मूल्यवान और आवश्यक हैं। इन सभी चीजों की कमी उनके बीच असंतोष पैदा करती है।

**1965 और 1980 के बीच जन्में-**इस पीढ़ी के लोग 1965 और 1980 के बीच पैदा हुए थे जिन्हे जनरेशन एक्स के रूप में जाना जाता है। वे चीजों को अपने तरीके से करना चाहते हैं और किसी भी नियम का पालन करना पसंद नहीं करते हैं। वे यह कहना चाहते हैं कि वे जिस तरह से चाहते हैं उस तरह से चीजों को कर सकते हैं। इनमें से कुछ लोगों ने अपने माता-पिता दोनों को काम पर जाते देखा है और इस चीज़ का जो

उन पर प्रभाव पड़ा है वह अच्छा नहीं था। इसलिए वे अपने परिवार के जीवन को अपनी नौकरी की तुलना में प्राथमिकता देते हैं। इस पीढ़ी के लोगों को ज्यादा काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

**1981 और 1999 के बीच जन्में-**यह 1981 और 1999 के बीच पैदा हुए लोगों का समूह है। इनमें से अधिकांश ने अभी काम करने की उम्र में प्रवेश किया है। यह समूह सार्थक काम में शामिल होने में दिलचस्पी लेता है और अपने काम के प्रति अपनी फीडबैक देने में भी आगे रहता है। इस पीढ़ी के लोग काफी रचनात्मक होते हैं। वे रचनात्मक व्यक्तियों और उन स्थानों पर काम करना पसंद करते हैं जहां उनकी रचनात्मकता का पता लगाने की अनुमति होती है। यह उनके लिए प्रेरणा का एक स्रोत है जो उन्हें जिंदा रखता है। यह एक ऐसी पीढ़ी है जो बहुत जल्दी ऊब जाती है। परंपरावादियों के विपरीत वे अपनी नौकरी काफी बार बदलते हैं।

**2000 से अभी तक जन्में-** इनके बारे में तो आप भलीभांति जानते ही होंगे।

**रिश्तों पर प्रभाव-** नए विचार और तथ्य हमेशा अच्छे होते हैं। इस तरह हमारे चारों तरफ की दुनिया अलग-अलग स्तरों पर विकसित होती है। हालांकि दो पीढ़ियां विशेष रूप से माता-पिता और बच्चों के बीच सोच और विचारों में अंतर अक्सर संघर्ष का एक मुद्दा बन जाता है। इस संघर्ष की वजह से संबंधों में तनाव आ जाता है।माता-पिता को अपने बच्चों से बड़ी उम्मीदें होती हैं। उनकी एक निर्धारित छवि है कि कैसे उनके बच्चों को उनकी परंपरा, मूल्यों के साथ-साथ उनके विस्तारित परिवार के अन्य सदस्यों से व्यवहार करना चाहिए। उन्हें लगता है कि वे जानते हैं कि उनके बच्चों को अपने जीवन में क्या करना चाहिए। अब समस्या तब होती है जब बच्चे के मन में एक अलग सोच बसी होती है (जो ज्यादातर मामलों में होती है)। ऐसा होने की वजह से संघर्ष शुरू होता है। यह कहना सही नहीं है कि माता-पिता हर बार पूरी तरह से गलत हैं। वे बड़े हैं और निश्चित रूप से अपने बच्चों के लिए आदर्श निर्देशक हैं और कई बार वे अपने बच्चों के लिए सही निर्णय भी लेते हैं। हालांकि युवा पीढ़ी शायद ही कभी इस चीज़ को समझ पाए। यह दुख की बात है कि जनरेशन गैप कई रिश्तों में खटास का कारण रहा है।

**कैसे इस अंतर को भरा जाए?**

माता-पिता का रिश्ता दुनिया में सबसे सुंदर संबंध है। इसका प्यार से पालन पोषण करना चाहिए और देखभाल के साथ संभाला जाना चाहिए। यह देखना जरूरी है कि कैसे ये रिश्ते पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ रहे विचारांतर की वजह से कमज़ोर पड़ रहे हैं।ऐसा देखा जाता है कि पुरानी पीढ़ी हमेशा एक बेहतर निर्णायक और निर्णय निर्माता होने का दावा करती है और युवा पीढ़ी अक्सर ख़ुद को अपराधी की तरह महसूस करती है। यह समझने का समय है कि जो भी कुछ वे करते हैं न तो वे इसमें पूरी तरह से गलत हैं और न ही पूरी तरह से सही हैं। वास्तव में इस मामले में सही और गलत की परिभाषा अलग-अलग पीढ़ियों के लिए अलग है। इसके लिए स्वीकृति और समझने की आवश्यकता है।पुरानी पीढ़ी के लोगों को यह समझना चाहिए कि उनके बच्चे दूसरे युग में पैदा हुए हैं और इसलिए उनकी मानसिकता उनसे अलग है। माता-पिता और दादा-दादी को, उनके नियमों और विचारों को अंधाधुंध रूप से लागू करने के बजाय, ध्यान देना होगा कि उनके बच्चे क्यों अलग व्यवहार कर रहे हैं और अलग-अलग राय क्यों रखते हैं।

माता-पिता को अपने बच्चों की मनोदशा को समझने के लिए उनका दोस्त बनना चाहिए। दूसरी ओर बच्चों को अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए। उन्हें अपने माता-पिता पर भरोसा करना चाहिए और उनके साथ अपने विचार साझा करना चाहिए। बच्चों को अपने माता-पिता से बातचीत के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए और समझना चाहिए कि उनको माता-पिता से मिलने वाली सलाह गलत नहीं है। यह उन्हें जीवन में प्रगति करने में मदद करेगा।माता-पिता को हर बार अपने बच्चों पर नज़र नहीं रखनी चाहिए और उन्हें हर चीज में टोकने के बजाए उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। माता-पिता को अपने बच्चों को छूट देते समय कुछ सीमाएं निर्धारित करनी चाहिए जिसका बच्चों को भी सम्मान करना चाहिए। दो-तरफा संचार एक मजबूत संबंध का आधार है और दोनों माता-पिता और बच्चों को यह सुनिश्चित करना

चाहिए कि वे इसे बनाए रखें। हर गंभीर मुद्दे पर चर्चा की जानी चाहिए और दोनों पार्टियों को इस पर बहस के बजाए एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करनी चाहिए हालांकि यह दोनों पार्टियों के लिए बहुत ही मुश्किल काम है।

मानव जाति लगातार विकसित हो रही है और इसलिए विभिन्न पीढ़ियों से संबंधित लोगों की विचारधाराओं में बदलाव आया है। हालांकि किसी अन्य से अलग राय होना पूरी तरह से ठीक है लेकिन कभी-कभी यह संघर्ष का एक कारण भी बन सकता है।जनरेशन गैप इसलिए होता है क्योंकि दुनिया लगातार बदलती रहती है। हमें यह समझना चाहिए कि अलग-अलग समय में पैदा हुए लोग एक-दूसरे से अलग होते हैं। लोगों को एक-दूसरे पर अपने विचारों और विश्वासों को थोपने के बजाए एक-दूसरे के व्यक्तित्व का सम्मान करना चाहिए।

---

# ट्रेन डिटेक्शन प्रणाली

**नागमणि कुमार**

कनिष्ठ इंजीनियर/सिगनल विभाग/मुख्यालय

**परिचय**

छुक-छुक करती चलती रेल गाड़ी में यात्रा करना सभी के लिए आनंद दायक है। इस संचालन के पीछे रेलवे के कितने विभाग काम करते हैं -क्या आप जानते है? रेल लाइन बिछाने से पूर्व अंतिम मार्गनिर्धारण हेतु सर्वे किया जाता है। संभाव्यता पर ध्यान दिया जाता है। इससे मिलनेवाले वित्तीय लाभ पर भी गौर किया जाता है। इसके बाद इंजीनियरी विभाग, परिचालन विभाग , बिजली विभाग तथा सिगनल व दूरसंचार विभाग द्वारा सम्मिलित रूप से कार्य किया जाता है। इसके बाद यांत्रिक विभाग तथा परिचालन विभाग अपना-अपना काम देखते हैं। संरक्षा विभाग की भी इसमें अहम भूमिका होती है। इतना सब होने के बाद रेल संचालन प्रारंभ किया जाता है।

मैं इस लेख में सिगनल विभाग से संबंधित कुछ जानकारी देना चाहूंगा। रेल गाड़ियों के सुरक्षित संचालन में सिगनल विभाग की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। रेलपथ में किसी गाड़ी का होना सुनिश्चित करने के लिए कई तरीके अपनाए जाते हैं। उसी में एक है ट्रेन डिटेक्शन प्रणाली।

रेल ट्रैक में कहीं पर किसी रेल गाड़ी के होने का पता लगाने को ट्रेन डिटेक्शन प्रणाली के रूप में जाना जाता है। मुख्यतः ये दो प्रकार के होते है:-

1. **ट्रैक सर्किट (डीसी, ऐएफटीसी)**
2. **ऐक्सल काउन्टर**

**ट्रैक सर्किट (डीसी, ऐएफटीसी)**

ट्रैक सर्किट, ट्रेन डिटेक्शन प्रणाली का वह तकनीक है जो बिजली इंजीनियरी के आधारभूत नियमों पर कार्य करता है। इस तकनीक में रेल ट्रैक के एक खास हिस्से को निकटवर्ती रेल से विद्युत रूप से पृथक किया जाता है तथा पृथक किए गए दोनों पटरियों को एक सर्किट पथ की तरह इस्तेमाल किया जाता है। रेल के दोनों पथों को बैटरी द्वारा पाज़िटिव और नेगटिव धारा प्रवाहित किया जाता है। जब कोई रेल गाड़ी इस खास हिस्से से गुजरती है तब दोनों पटरियाँ शॉर्ट सर्किट हो जाती हैं(चूंकि ट्रेन का ऐक्सल (धुरा) तथा पहिया स्टील का बने होते हैं और जो विद्युत के सुचालक हैं) और सर्किट के दूसरे सिरे पर लगे रीले (इलेक्ट्रो मैग्नेटिक स्विच) में विद्युत सप्लाई नहीं पहुंच पाती है और इसलिए वह डाउन हो जाता है और इस संकेत से समझा जाता है कि उस खास हिस्से पर कोई गाड़ी मौजूद है।

ट्रेन डिटेक्शन प्रणाली में ट्रैक सर्किट तकनीक के बारे में ऊपर दिया गया विवरण बहुत ही संक्षिप्त है। इस लेख का मुख्य उद्देश्य है **ट्रेन डिटेक्शन प्रणाली में ऐक्सल काउन्टर** तकनीक पर विस्तृत चर्चा।

## ऐक्सल काउन्टर (डिजिटल)

ऐक्सल काउंटर रेलवे पटरी पर लगा एक खास उपकरण है जो ट्रैक पर दो पाइंट के बीच रेल गाड़ी के गुजरने (उपस्थिति) का पता लगाता है। सेक्शन के प्रत्येक छोर पर काउंटिंग हेड (या डिटेक्शन पॉइंट) स्थापित होता हैऔर जैसे ही रेल गाड़ी , ऐक्सल डिटेक्शन पॉइंट से गुजरती है,तब एक काउंट बढ़ जाता है। ठीक इसी तरह से सेक्शन के दूसरे छोर पर भी गिनती की जाती है और इस तरह से जब सेक्शन के प्रवेश तथा निकास के छोरों पर ऐक्सल की संख्या समान होती है। इससे जुड़ा कंप्यूटर यह संकेत देता है कि वह सेक्शन खाली है अन्यथा नहीं।

वर्तमान डीसी ट्रैक सर्किट में निम्नलिखित समस्याओं के कारण **ऐक्सल काउन्टर तकनीक**, डीसी ट्रैक सर्किट के विकल्प के रूप में जाना जाता है।

1. इंसुलेटेड रेल जॉइन्ट (आईआरजे)की आवश्यकता होती है जो कि पटरी को काटकर नाइलान के प्लेट के माध्यम से ज्वाइन किया जाता है। इस आईआरजे की फ़ेल होने की सम्भावना होती है और साथ ही इसके कारण उस खास जॉइन्ट पर, पटरी अन्य जगह की तुलना में कमजोर भी होती है।
2. पटरी में बैटरी द्वारा विद्युत सप्लाई दी जाती है। इसमें जंग लगने से विद्युत सप्लाई रुक जाती है और प्रणाली अक्सर फ़ेल हो जाती है।
3. अधिक वर्षा से पटरियों पर पानी होने के कारण भी डीसी ट्रैक सर्किट फ़ेल हो जाती है, क्योंकि पानी के कारण यह प्रणाली शॉर्ट सर्किट हो जाती है और बिना किसी ट्रेन के ही उस हिस्से में ट्रेन की मौजूदगी को दर्शाता है जो गलत है।

## ऐक्सल काउन्टर कार्य प्रणाली

ऐक्सल काउन्टर की कार्य प्रणाली, दो कॉइल के आपसी (म्यूचुल) इन्डक्शन सिद्धांत पर आधारित है। जैसा की फोटो- 1 में दर्शाया गया है, जब ट्रैक पर गाड़ी (पहिया) नहीं रहती है तब ट्रांसमीटर से निकलनेवाला एल्क्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड रीसीवर कॉइल में बहुत ही कम मात्रा में पहुंच पाता है जिससे रीसीवर कॉइल में बहुत कम प्रेरण (इन्डक्शन) वोल्टेज उत्पन्न होता है, जबकि दूसरी स्थिती में जैसे ही कोई पहिया मौजूद होता है तब ट्रांसमीटेर तथा रीसीवर कॉइल के बीच उपलब्ध एक फेरोमैग्नेटिक (लौह-चुंबकीय) पदार्थ के कारण ट्रांसमीटर कॉइल से निकलनेवाले मैग्नेटिक फील्ड रीसीवर कॉइल से ज्यादा से ज्यादा गुजरता है और अधिकतम प्रेरण (इन्डक्शन) वोल्टेज उत्तपन्न होता है और इस तरह से यह जाना जाता है कि एक ऐक्सल (पहिया) उस डिटेक्शन पॉइंट से गुजरा है और यह प्रक्रिया प्रत्येक पहिये के गुजरने के साथ होती रहती है।

**फोटो- 1 ट्रांसमीटर तथा रीसीवर कॉइल का जोड़ा (डिटेक्शन पॉइंट) ट्रैक के साथ लगाया हुआ**

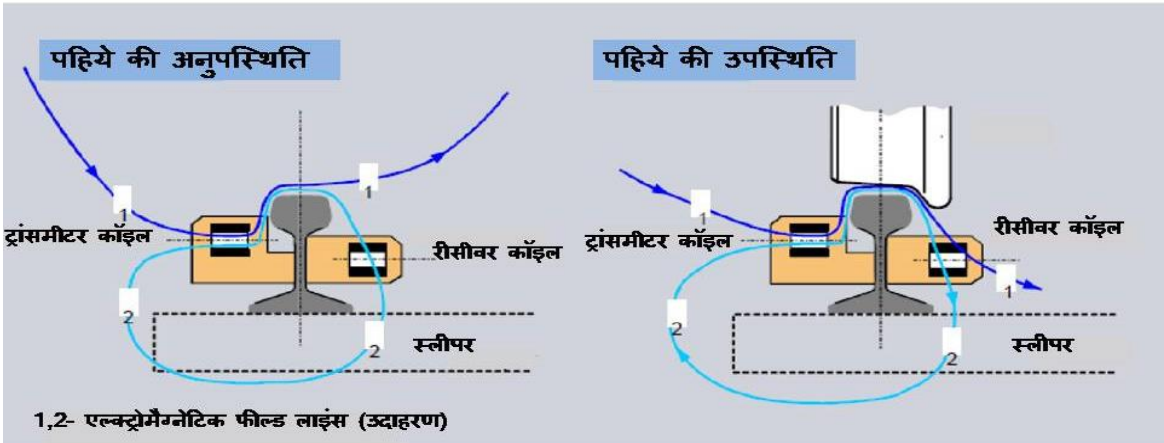

फोटो- 2 में दर्शाए अनुसार ब्लॉक सेक्शन (या स्टेशन) के दोनों सिरों पर डिटेक्शन पॉइंट होते हैं। ये दोनों डिटेक्शन पॉइंट कॉपर तार या ऑप्टिकल फ़ाइबर से जुड़े रहते हैं और इन दोनों के मध्य में सेंट्रल एवलुटर सिस्टम (कंप्यूटर) होता है और इसीसे जुड़ा हुआ एक काउन्टर होता है जो प्रत्येक प्रवेश तथा निकास से गुजरने वाली ऐक्सल (पहिये) की संख्या को ठीक-ठीक रिकार्ड करता है। कंप्यूटर में जब प्रवेश तथा निकास से गुजरने वाली पहियों की संख्या बराबर होती है तो यह संकेत दिया जाता है किरेलपथ के उक्त भाग से गाड़ी पूरी तरह से गुजर चुकी है और वह हिस्सा खाली है अन्यथा ट्रैक सेक्शन (ब्लॉक सेक्शन) में कोई गाड़ी है। इससे उस सेक्शम में कोई दूसरी गाड़ी प्रवेश नहीं कर सकती है।

**फोटो 2: ब्लॉक सेक्शन के प्रवेश तथा निकास प्वाइंटों पर लगे ऐक्सल कॉउंटर के कार्य के ब्लॉक आरेख**

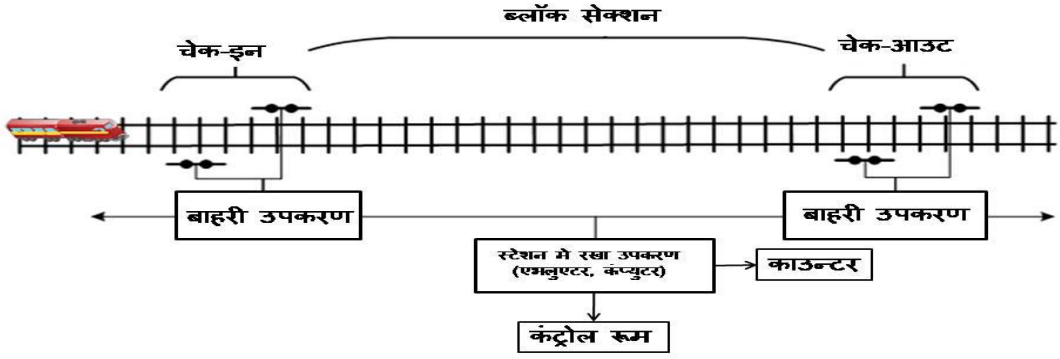


**डीसी ट्रैक सर्किट की तुलना में ऐक्सल काउन्टर के लाभ**

डीसी ट्रैक सर्किट प्रणाली से संबंधितसमस्याओं के बारे मेंपहले ही जो बताया गया है उन सभी समस्याओं का समाधान ऐक्सल काउन्टर देता है जैसे:

1. इसमें आईआरजे की आवश्यकता नहीं होती जिससे विफलता की संभावना कम है।
2. पटरी में सीधे विद्युत सप्लाई की जरूरत नहीं है, इसीलिए इससे जुड़ीविफलता की घटनाएंनहीं होती हैं जो खुले तारों में जंग लगने से होतीं हैं।
3. सबसे बड़ी उपलब्धि इस प्रणाली तथा उपकरण की यह है कि पटरी पर कितनी भी पानी भर जाए, या भारी बारिश हो, यह उपकरण फ़ेल नहीं होता है। किसी सेक्शन तथा स्टेशन मेंरेलगाड़ी की मौजूदगी या खाली होने की यह सही- सही स्थिती बताता है।
4. ऐक्सल काउन्टर उपकरण में ट्रैक पर गुजर रही रेल गाड़ी की गति की दिशा भी ज्ञात होती है जो किसी पारंपरिक डीसी ट्रैक सर्किट से नहीं किया जा सकता है।

**दक्षिण रेलवे में डिजिटल ऐक्सल काउन्टर का प्रयोग**

दक्षिण रेलवे में कुल 490 स्टेशन हैं । इन 490 स्टेशनों में से 22 स्टेशन ऐसे हैं जहां पर डिजिटल ऐक्सल काउन्टर या तो डीसी ट्रैक सर्किट के विकल्प के रूप में या डीसी ट्रैक सर्किट के साथ दोहरे ट्रैक डिटेक्शन के रूप में लगाया गया है। 19 ऐसे स्टेशन हैं जहां पर डिजिटल ऐक्सल काउन्टर लगाने के लिए प्रस्ताव की अनुमति मिल गई है।

डिजिटल ऐक्सल काउन्टर दो स्टेशनो के बीच के ब्लॉक सेक्शन में रेल गाड़ी के होने या या ना होने की स्थिती को जानने के लिए इस्तेमाल होता है। इस रेलवे में ऐसे ब्लॉक सेक्शन 515 हैं जिसमें से कुल 474 ब्लॉक सेक्शनों पर डिजिटल ऐक्सल काउन्टर ट्रेन डिटेक्शन प्रणाली के रूप में इस्तेमाल होता है। शेष 41 सेक्शनों पर डीसी ट्रैक सर्किट, ट्रेन डिटेक्शन उपकरण के रूप में इस्तेमाल होता है। इन शेष 41 सेक्शनों में से 25 ऐसे सेक्शन हैंजहां पर ये उपकरण लगाने की अनुमति मिल चुकी है और इन्हे लगाने का काम चल रहा है।

**दक्षिण रेलवे में सिगनल तथा टेलीकॉम विभाग का महत्वाकांक्षी लक्ष्य है कि इस रेलवे के सभी 490 स्टेशनों और 515 ब्लॉक सेक्शनों में डिजिटल ऐक्सल काउन्टर लगा दिए जाएं। इस उपकरण को लगाने से रेल गाड़ियों के सुरक्षित परिचालन में और भी मदद मिलेगी और सिगनलिंग से जुड़ी विफलताओं की घटनाएं भी कम होंगी।**

---

# परीक्षाएं

**संध्या पी भट्ट**

वरिष्ठ आशुलिपिक/हिंदी अनुभाग/मुख्यालय

परीक्षाएं कई प्रकार की हैं। सामान्यत: परीक्षा का नाम सुनते ही विद्यालय, महाविद्यालय की परीक्षाएं याद आती हैं। सरकारी कार्यालयों में पदोन्नति के लिए लिखी जाने वाली परीक्षाएं भी हैं। आजकल नियम सा आ गया है कि सभी परीक्षाओं के प्रश्न पत्रों में उत्तर देने की वैकल्पिक व्यवस्था हो यानी बहु विकल्प के उत्तर होने चाहिए। पहले लोग यह सोचते थे कि अब परीक्षाएं बहुत आसान होंगी। लेकिन महसूस होने लगा कि यही वास्तव में बहुत मुश्किल हो रहा है। सोचते-सोचते मैंने यह कारण पाया कि परीक्षा लिखने वाला इन विकल्पों से बाहर नहीं सोच पाता है और कुछ प्रश्वनों के लिए जब 'इनमें से कुछ नहीं' का विकल्प दिया जाता है तो यही उत्तर अधिकांश चुनते हैं जब उनके तर्क में बाकी तीन ठीक नहीं बैठते। आजकल निर्देश में यह भी दिया जाता है कि 'दिए गए विकल्पों में से अधिक उपयुक्त विकल्प चुनें' इसका मतलब यह है कि एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं पर इनमें से जो अधिक सही है उसको चुनना है।

मेरे विचार में तकनीकी विषयों के ऐसे प्रश्नपत्र भाषाई प्रश्न पत्रों की तुलना में आसान हैं। भाषा का प्रयोग हर कोई कर लेता है भले ही वह उसके व्याकरण या अन्य सूक्ष्म तत्व जैसे रस, चंद, अलंकार जाने या न जाने। यदि तकनीकी परीक्षा भी देनी है तो पहले इस परीक्षा में उत्तीर्ण होना है। सुना है कि अनुवादकों की परीक्षा के लिए भी बहुविकल्पीय प्रश्न पत्र दिया जाता है और उसमें उत्तीर्ण होने वालों को ही अनुवाद परीक्षा या तकनीकी परीक्षा में शामिल होने दिया जाता है।

इस बात को स्पष्ट करने के लिए हिंदी के ही एक बहुविकल्पीय प्रश्नपत्र नीचे प्रस्तुत है। आप स्वयं परीक्षा कर लीजिए कि आप कितने सक्षम हैं। वाकई यदि कोई इन सबका सही उत्तर जानना चाहता है तो कृपया hindiofficer@sr.railent.gov.in में भेजकर जान लें।

## राजभाषा-हिन्दी

1. जिस भाषा में शासक या शासन का काम होता है, उसे कहते हैं-

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) राजभाषा | (B) सम्पर्क भाषा | (C) राष्ट्रभाषा | (D) जनभाषा |

2. अशोक के समय में राजभाषा थी-

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A)संस्कृत | (B) पालि | (C)प्राकृत | (D) अपभ्रंश |

3. मुसलमान बादशाहों के शासनकाल में मुहम्मद गोरी से लेकर अकबर तक के शासन में निम्नलिखित में से कौन-सी भाषा राजभाषा थी?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A)संस्कृत | (B) अरबी | (C)तुर्की | (D) हिन्दी |

4. अकबर के गृहमंत्री टोडरमल के आदेश से किस भाषा को राजभाषा की हैसियत मिली?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A)फारसी | (B) अरबी | (C)हिन्दी | (D) संस्कृत |

5. ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने कब तक फारसी को राजभाषा बनाए रखा?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) 1733ई .तक | (B) 1833 ई .तक | (C) 1860ई .तक | (D) 1900 ई .तक |

6. अंग्रेजी को राजभाषा बनवाने का श्रेय किसे है?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A)गिलक्राइस्ट | (B) ग्रियर्सन | (C)लॉर्ड मैकाले | (D) जेम्स प्रिंसेप |

7. उर्दू की जगह हिन्दी को कचहरियों में स्थान दिलाने के लिए सबसे पहले किसने लिखा?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A)पंडित जवाहरलाल नेहरू | (B) स्वामी विवेकानंद | (C)डॉ.भीमराव अम्बेडकर | (D)भारतेन्दु हरिश्चन्द्र |

8. "राजभाषा हिन्दी देश की एकता को कश्मीर से कन्याकुमारी तक अधिक सुदृढ़ बना सकेगी" यह कथन किसका है?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A)जेड .एच .लारी | (B) श्यामा प्रसाद मुखर्जी | (C)सच्चिदानंद सिन्हा | (D) डॉ .राजेन्द्र प्रसाद |

9. हिन्दी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा बनाने की माँग कब उठी?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) स्वाधीनता प्राप्ति के उपरांत | (B) संविधान निर्माण के समय | (C)संविधान सभा के गठन के समय | (D) राष्ट्रीय चेतना के विकास के साथ |

10 .भारत के संविधान में हिन्दी को कब मान्यता प्रदान की गई-

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) 14 सितम्बर, 1949ई .को | (B) 14 सितम्बर, 1950ई .को | (C) 26जनवरी, 1949ई को | (D) 26 जनवरी, 1950ई .को |

11 .संविधान की धारा 120 के अनुसार -संसद में कार्य-

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A)हिन्दी या अंग्रेजी में | (B) केवल हिन्दी में किया जाएगा | (C)केवल अंग्रेजी में | (D) राष्ट्रपति की इच्छानुसार किसी भी भाषा में |

12 .संविधान की धारा 120 के अनुसार यथास्थिति लोकसभा का अध्यक्ष या राज्य सभा का सभापति किसी सदस्य को निम्नलिखित में से किस भाषा में सम्बोधित करने की अनुमति दे सकता है?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) सम्पर्क भाषा | (B) मातृभाषा | (C) मानक भाषा | (D) काव्य भाषा |

13. अनुच्छेद 344(1) के अनुपालन में राष्ट्रपति द्वारा वर्ष 1955 में निम्नलिखित में से किस आयोग के गठन हेतु आदेश जारी हुआ?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A)राजभाषा आयोग | (B) वित्त आयोग | (C) निर्वाचन आयोग | (D) योजना आयोग |

14 .राजभाषा आयोग की सिफारिशों की जाँच के लिए संविधान के अनुच्छेद 344(4) के अनुसार एक समिति गठित की गई जिसमें

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) लोक सभा के 20 सदस्य | (B) राज्य सभा के 10 सदस्य | (C) लोक सभा के 20 तथा राज्य सभा के 10 सदस्य | (D) लोक सभा एवं राज्य सभा का कोई सदस्य नहीं |

15 .संविधान के किस अनुच्छेद के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) अनुच्छेद 343 | (B) अनुछेद 344 | (C) अनुच्छेद 345 | (D) अनुच्छेद 346 |

16 .संविधान के प्रारम्भ से किस अवधि तक शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग यथावत् किया जाने का उल्लेख है ?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) 10वर्ष | (B) 15वर्ष | (C) 20वर्ष | (D) 25वर्ष |

1 7 .राजभाषा के सम्बन्ध में आयोग और संसद की समिति का उल्लेख है

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) अनुच्छेद 343 में | (B) अनुच्छेद 345 में | (C)अनुच्छेद 344 में | (D)अनुच्छेद 346 में |

18 .राजभाषा आयोग की संस्तुतियों की जाँच समिति ने अपनी रिपोर्ट कब प्रस्तुत की थी?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) 14सितम्बर, 1948 | (B) 26 जनवरी 1950 | (C) 8 फरवरी, 1959 | (D) 5 जून, 1960 |

19 .राजभाषा आयोग की प्रथम बैठक कब हुई?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) 15 जुलाई,1955 | (B) 15 जुलाई, 1950 | (C) 20 जुलाई, 1949 | (D) 20 जुलाई, 1948 |

20 .राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) पं.नेहरू | (B) बाल गंगाधर खरे | (C) पुरुषोतम दास टंडन | (D) श्री .राजगोपालाचारी |

21 .संविधान का अनुच्छेद 345 किससे सम्बन्धित है?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) राजभाषा आयोग के कार्यों की समीक्षा | (B) राजभाषा के रूप में हिन्दी की अनिवार्यता | (C) वैज्ञानिक एवं तकनीकी पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण | (D) राज्य में प्रयुक्त होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अनेक या हिन्दी को अंगीकृत करने से |

22 . शिकायतों को दूर करने के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा का उल्लेख हुआ है

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) अनुच्छेद 350 में | (B) अनुच्छेद 349 में | (C)अनुच्छेद 348 में | (D)अनुच्छेद 347 में |

23 .संविधान के अनुच्छेद 350(क) में निम्नलिखित में से किसका उल्लेख हुआ है?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) राजभाषा आयोग और समिति | (B) हिन्दी की व्यापकता हेतु प्रचार | (C) प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएँ | (D) उच्च शिक्षा में हिन्दी में शोध कार्य को प्रोत्साहन |

24 .राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त विशेष अधिकारी का कर्तव्य है-

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) भाषाई अल्प संख्यकों के लिए उपवन्धित रक्षोपायों से संबंधित कार्य | (B) अष्टम अनुसूची की भाषाओं का अध्ययन करना | (C) हिन्दी शिक्षण के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करना | (D) इनमें से कोई नहीं |

25 .उच्चतम न्यायालय,उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों,विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा का उल्लेख है-

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) अनुच्छेद 344 में | (B) अनुच्छेद 345 में | (C) अनुच्छेद 346 में | (D) अनुच्छेद 348 में |

26. अष्टम अनुसूची में 'सिंधी' भाषा को सम्मिलित कर लेने पर 1969 ई. में भाषाओं की संख्या हो गई थी-

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) 13 | (B) 14 | (C) 15 | (D) 18 |

27 .वर्तमान में संविधान की अष्टम् अनुसूची में कितनी भाषाओं का उल्लेख है?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) 22 | (B) 20 | (C) 10 | (D) 15 |

28 .निम्नलिखित में से कौन सी भाषा अष्टम् अनुसूची में सम्मिलित नहीं है?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) सिंधी | (B) नेपाली | (C) कोंकणी | (D) अंग्रेजी |

29 .निम्नलिखित में से किस राज्य की राजभाषा हिन्दी नहीं है?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) हिमाचल प्रदेश | (B) झारखण्ड | (C) उत्तरांचल | (D) तमिलनाडु |

30.राजभाषा अधिनियम 1963 कब संशोधित किया गया?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) 1964 | (B) 1965 | (C) 1966 | (D) 1967 |

31 .राजभाषा नियम 1976 के अनुसार देश-भर के केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों को तीन वर्गों में बाँटा गया है, ये वर्ग हैं

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) 'क','ख' और 'ग' | (B) हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू | (C) दक्षिणी, पूर्वी और उत्तरी | (D) पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी |

32 .उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, बिहार, झारखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और दिल्ली निम्नलिखित में से किस क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) 'क' क्षेत्र | (B) 'ख' क्षेत्र | (C) 'ग' क्षेत्र | (D) उपर्युक्त सभी |

33 . 'ख' क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित राज्य हैं

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) उत्तरांचन, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, राजस्थान, दिल्ली | (B) पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, केन्द्र शासित चण्डीगढ़, अण्डमान निकोबार आदि | (C) उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब आदि | (D) दिल्ली, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, असम, चण्डीगढ़ |

34. राजभाषा के नियमानुसार किस क्षेत्र के कार्यालयों को हिन्दी में ही पत्र भेजे जाने हैं और यदि परिस्थितिवश अंग्रेजी में पत्र भेजना हो, तो उसका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) 'क' क्षेत्र | (B) 'ख' क्षेत्र | (C) 'ग' क्षेत्र | (D) इनमें से कोई नहीं |

35. पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र द्रविड़ भाषी राज्य निम्नलिखित में से किस क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित हैं?

| | | | |
|---|---|---|---|
| (A) 'क' क्षेत्र | (B) 'ख' क्षेत्र | (C) 'ग' क्षेत्र | (D) इनमें से कोई नहीं |

# बिहार का महापर्व 'छठ पूजा'

**अभिषेक कुमार**
वरिष्ठ लिपिक, सिगनल व दूरसंचार विभाग, मुख्यालय

छठ पूजा हर साल दीपावली के छठवें दिन यानि हिन्दी कैलंडर के कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष के षष्ठी के दिन उत्तर भारत के राज्यों (बिहार, झारखण्ड,पश्चिम बंगाल, पूर्वी उत्तर प्रदेश) में मनाए जाने वाला प्रमुख त्योहार है। यह पर्व सम्पूर्ण भारत में वैदिक काल से मनाया जाता है। यह पर्व ऋग्वेद में वर्णित सूर्य देवता तथा उनकी बहन छठी मइया को समर्पित है।

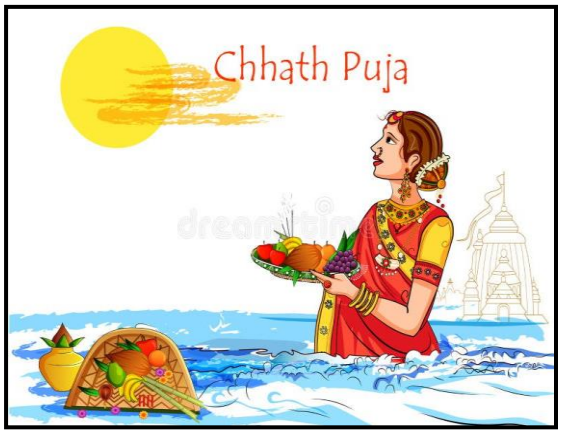


ऐसी मान्यता है कि महाभारत काल में द्रौपदी व कर्ण ने छठ माता की पूजा की थी। इस त्यौहार के अनुष्ठान कठोर हैं और इसे चार दिन मनाया जाता है। पहला दिन नहाय खाए, दूसरा दिन खरना, तीसरा दिन संध्या अर्घ्य व चौथा दिन उषा अर्घ्य होता है। यह पर्व पारिवारिक सुख शांति और मनोवांछित आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए मनाया जाता है। इस पर्व में विशेष तरह के पकवान जैसे- लौकी, दाल और गुङ की खीर, ठेकुआ बनाए जाते हैं, जो आजकल पूरे भारत में प्रसिद्ध हो गए हैं।

छठ पर्व का पहला दिन "नहायखाय" के नाम से जाना जाता है। इस दिन पूरे घर की साफ-सफाई की जाती है। इस दिन व्रती नहाने के बाद ही सादा भोजन (कद्दू की सब्जी, मूंग या चना दाल) ग्रहण करते हैं। छठ पर्व का दूसरा दिन "खरना" नाम से जाना जाता है। इस दिन व्रती पूरे दिन उपवास रखते हैं तथा शाम में चावल व गुड़ की खीर और रोटी बनाकर सूर्यदेव को अर्पित करते हैं और उसके बाद व्रती को छोड़कर घर के अन्य सभी लोग बाहर चले जाते हैं। उन सबके बाहर जाने के बाद व्रती अकेले खाते हैं जिसे एकांत कहा जाता है। इसके पश्चात् ही घर के सभी लोग खा सकते हैं। इसके बाद अगले 36 घंटों के लिए व्रती निर्जला व्रत रखते हैं।

छठ पर्व का तीसरा दिन संध्या अर्घ्य के नाम से जाना जाता है। इस दिन शाम के समय एक सूप में नारियल, अलग-अलग तरह के फल और पूजा का अन्य सामान टोकरी में रख कर घर का पुरुष अपने हाथों से उठाकर छठ घाट पर ले जाता है। यह अपवित्र न हो इसलिए इसे सर के ऊपर की तरफ रखते हैं। शामको उस टोकरी को सर पर रखते हुए व्रती पानी में खड़े रहते हैं और सूर्यास्त के पहले पांच बार अर्घ्य देते हैं।

चौथे दिन यानी उषा अर्घ्य के दिन व्रती लोग पूरब की ओर मुंह कर पानी में खड़े होते हैं व सूर्योपासना करते हैं। व्रती लोग खरना दिन से इस दिन तक निर्जला उपवास रखकर इस सुबह ही नमकयुक्त भोजन करते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि सूर्य का ढलना कमजोरी का सूचक है, लेकिन छठ पर्व मे हम डूबते हुए सूर्य की भी पूजा करते है, क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि जिसका अस्त हुआ है उसका फिर उदय भी होगा। यह एक प्रकार से सकारत्मक सोच है। यह त्योहार बिहार के लोगों के लिए एक पर्व ही नहीं बल्कि अपने भगवान के प्रति भावात्मक लगाव को प्रदर्शित करता है।

---

# राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत – एक परिचय

**विजय सिंह मीना**

कनिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

राजस्थान को सांस्कृतिक दृष्टि से भारत के समृद्ध प्रदेशो में गिना जाता है। संस्कृति एक विशाल सागर है जिसकी आत्मा गांव-गांव,ढाणी-ढाणी,चौपाल,चबूतरे, महल-प्रासादों, घर-घरएवं जन-जन में समाई हुई है। राजस्थान की संस्कृति का स्वरूप रजवाड़ो और सामंती व्यवस्था में देखा जा सकता है। संस्कृति में साहित्य और संगीत के अतिरिक्त कला- कौशल, शिल्प, महल, मंदिर, किले, झोंपड़ियों का भी अध्ययन किया जाता है, जो हमारी संस्कृति के दर्पण हैं। संस्कृति के अन्तर्गत यहाँ की वेश-भूषा, त्यौहार, रहन-सहन, खान-पान, तहजीब-तमीज सभी की अलग ही पहचान हैं।

राजस्थानी संस्कृति समष्टिगत, समन्वयात्मक और प्राचीन है जिसे भौगोलिक विविधता और प्राकृतिक वैभव ने और आकर्षक बनाया है। राजस्थानी संस्कृति लोक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्कृति है। "पधारो म्हारे देश" के निमंत्रण की संवाहक राजस्थानी संस्कृति, सांस्कृतिक पर्यटन का पर्याय है। 50 जिलों को अपने आंचल में समेटे राजस्थान की धरती सांस्कृतिक परंपराओं का अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करती है।

राजस्थान की सांस्कृतिक परंपराएं, विरासत से जुड़े स्थल, प्रकृति और वन्य जीवों की विविधता और प्राचीन इतिहास पर्यटन के लिए खुला आमंत्रण हैं। समृद्ध लोक संस्कृति के परिचायक तीज-त्यौहार, उमंग के प्रतीक मेले, आस्था और विश्वास के प्रतीक लोकदेवता, फाल्गुन की मस्ती में नृत्य करती आकर्षक आभूषणों से युक्त महिलाएं पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त है। "धरती धोरारी" की झिलमिलाती रेत और गूंजता सुरीला लोक संगीत पर्यटक को अभिभूत करने वाला होता हैं।

राजस्थानी खाना जिसमें दाल, बाटी, चूरमा, मकई और बाजरे की रोटियाँ व सरसो का साग विश्व प्रसिद्ध है। जोधपुर की मिठाइयाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। यहा पर विश्व प्रसिद्ध थार का रेगिस्तान है, जिसमें ऊँट को यातायात के साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है। ऊँट को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है। यहाँ पर पानी की बहुत कमी है, इस कारण से महिलाएं पीने का पानी मिट्टी के मटकों में भरकर दूर-दूर से लेकर आती हैं।

सांस्कृतिक दृष्टि से राजस्थान को 7प्रमुख भागों में बांटा गया है जो निम्न प्रकार है -

**1.मारवाड़** - राजस्थान के पश्चिम में स्थित प्राचीन मारवाड़ रियासत का क्षेत्र सांस्कृतिक विभाग के अंतर्गत आता है इसमें जोधपुर, नागौर, पाली, जालोर, बाड़मेर आदि जिले आते हैं। यह पूरा क्षेत्र थार के मरुस्थल का हिस्सा है। इस क्षेत्र की भाषा मारवाड़ी है। इस क्षेत्र में घूमर, घुड़लो, ढोल, लूर, डांडिया तथा गैर नृत्य किए जाते हैं।

**2. मेवाड़** - राजस्थान के दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व में स्थित प्राचीन मेवाड़ रियासत के अंतर्गत उदयपुर, चित्तौड़, राजसमंद, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, भीलवाडा एवं प्रतापगढ़ जिले को सम्मिलित किया गया है। यह क्षेत्र मुख्यतः पहाड़ी क्षेत्र है। यहां के लोग वीर, स्वाभिमानी एवं स्वतंत्रता प्रिय हैं। इस क्षेत्र में मेवाड़ी भाषा बोली जाती है। यहाँ पर लगभग 1400 वर्षों तक गुहिल वंश का शासन रहा है।

**3. ढूंढाड़** - राजस्थान के मध्य एवं मध्य-पूर्व क्षेत्र यानी प्राचीन आमेर रियासत को ढूंढाड़ क्षेत्र में सम्मिलित किया गया है। इसके अंतर्गत जयपुर, दौसा, टोंक, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी जिले आते हैं। यहां पर उर्वरक मैदान तथा रेत के टीले पाए जाते हैं। यहां पर ढूंढाड़ी भाषा बोली जाती है तथा यहां पर गणगौर तथा बड़ी तीज का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

**4. हाडोती** - हाड़ा चौहान द्वारा शासित क्षेत्र को हाडोती कहते हैं। इसके अंतर्गत कोटा, बूंदी, झालावाड़, बांरा आदि जिले आते हैं। यह पूरा क्षेत्र मुख्यतः पठारी है जिसमें बड़े सरोवर, नदियां, हरे-भरे उपजाऊ मैदान आदि हैं। यहां पर मुख्यतः काली मिट्टी और चिकनी मिट्टी पाई जाती है। इस क्षेत्र में न्हाण प्रसिद्ध लोक नाट्य है।

**5. शेखावटी** - इस क्षेत्र पर कच्छावा राजकुमार शेखा के वंशजों का शासन रहा था, इसलिए इसे शेखावटी क्षेत्र कहा जाता है। इस क्षेत्र में मुख्यतः चुरू, सीकर, झुंझुनू जिले आते हैं। इस क्षेत्र के संपूर्ण भाग में रेतीले धोरे तथा मैदान हैं। इस क्षेत्र में कई नदियों के किनारे प्राचीन काल की सभ्यता विद्यमान है। इसका खेतड़ी क्षेत्र तांबे के लिए जाना जाता है। इस क्षेत्र में हवेलियां, भित्तिचित्र, गीदड़ नृत्य अधिक प्रसिद्ध हैं।

**6. ब्रज**–भरतपुर, धौलपुर एवं करोली जिले को इस भाग में सम्मिलित किया गया है क्योंकि यह भाग मथुरा के चौरासी कोस के घेरे में आता है। इस क्षेत्र में ब्रज भाषा बोली जाती है जो काफी मधुर और लोकप्रिय हैं। नौटंकी और रासलीला आदि लोक नाटकों का आयोजन भी इस क्षेत्र में किया जाता हैं।

**7. मेवात**–इस क्षेत्र में अलवर, भरतपुर जिलों का गुड़गांव की तरफ का भाग आता है। उसमें मेव जाति बड़ी संख्या में निवास करती है, इसलिए इसे क्षेत्र को मेवात कहते हैं। इन लोगों का रहन-सहन, वेश-भूषा, खानपान आदि राजस्थान के दूसरे क्षेत्रों की तुलना में अलग प्रकार का है।

राजस्थानी संस्कृति जो गाँव-ढाणी, चौपाल-पनघट, महल-झोंपड़ी, किले-गढ़ी, खेत-खलियान से बहती हुई जन-जन रूपी सागर के संस्पर्श से इंद्रधनुषी छटा बिखेरती है और अपनी महक के साथ पर्व, मेले, तीज, त्योहार, नाट्य-नृत्य, श्रृंगार, पहनावा, रीति-रिवाज, आचार, व्यवहार आदि में प्रतिबिंबित होती है। जिसे रेत के धोरों के साथ-साथ वायुमंडल, वसुंधरा और रोम-रोम में उल्लसित और तरंगित अनुभूत किया जा सकता है।

राजस्थान की संस्कृति और परंपरा की मुख्य बात यह है कि राजस्थान के जनमानस की विशालता ने जिस प्रकार सभी मान्यताओं और आस्थाओं को फलने-फूलने दिया उसी प्रकार अनेक अनुयायियों के साथ भ्रातृभाव रखा।

अजमेर की ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह ईश्वर के श्रद्धालुओं की आस्था और विश्वास का केंद्र है जिस में न धर्म की पाबंदी है, न जाति, ना देश की, ना संप्रदाय की । हिंदू, मुसलमान, सिख और अन्य सभी धर्मावलंबी दरगाह पर अकीदत के फूल चढ़ाते हैं और मनौतियां मांगते हैं। आज अजमेर सूफी मत का प्रमुख अंतरराष्ट्रीय तीर्थ है।

राजस्थानी लोग अपनी संस्कृति और परंपरा पर गर्व करते हैं। यहाँ साल भर में मेलौं और पर्व-त्योहारों का तांता लगा रहता है। यहाँ एक कहावत प्रचलित है - सात वार नो त्योहार। राजस्थान के मेले और

पर्व-त्यौहार रंगारंग व दर्शनीय होते हैं। यह पर्व त्योहार लोगों के जीवन में उनकी खुशियों और उमंग के परिचायक हैं। प्राय: इन मेलों और त्योहारों के मूल में धर्म होता है।

उपासना स्थल, भव्य प्रासाद, अभेद्य दुर्ग और जीवन स्मारकों का संगम राजस्थान के कस्बों शहरों और उजड़ी बस्तियों में देखने को मिलता है। आमेर, जयपुर, जोधपुर, बूंदी, उदयपुर, शेखावाटी के मनोहारी विशाल प्रासाद और रणकपूर, ओसिया, देलवाड़ा, झालरापाटन के उत्कृष्ट कलात्मक मंदिर और जैसलमेर की पटवो की शानदार हवेलियां इत्यादि ऐसे ही कुछ प्रतीक हैं, जिन पर राजस्थानी कलाकारों के हस्ताक्षर हैं।

राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत में राजस्थान के दुर्गों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। राजस्थान में स्थित दुर्गों में चित्तोड़, जैसलमेर, रणथम्भौर, गागरोन, जालौर, सिवाना और भटनेर के दुर्ग ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत प्रसिद्ध रहे हैं। इनके साथ शूरवीरों के पराक्रम और वीरांगनाओं की वीर गाथाएं जुड़ी हैं, जो भारतीय इतिहास की अनमोल धरोहर हैं।

राजस्थान के जनमानस को यह दुर्ग और उनसे जुड़े आख्यान सदा से ही प्रेरणा देते आए हैं। वीरता और शौर्य के प्रतीक ये गढ़ और किले अपने अनूठे स्थापत्य, विशिष्ट संरचना, अद्‌भुत शिल्प और सौंदर्य के कारण दर्शनीय हैं।

राजस्थान की संस्कृति परंपरा विरासत में राजस्थानी लोक नृत्य का भी विशेष महत्व रहा है। लोक नृत्य राजस्थानी संस्कृति के वाहक हैं। यहां के लोक नृत्यों में सुर, ताल, लय, गीत आदि का सुंदर और संतुलित सामंजस्य देखने को मिलता है। गैर, चंग, गीदड़, घूमर, ढोल आदि नृत्य राजस्थान के जन-जीवन की संजीवनी बूटियाँ हैं।

चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, मांडलगढ़, अचलगढ़, रणथंबोर, गागरोन, भटनेर (हनुमानगढ़), बयाना, सिवाना, मंडोर, जोधपुर, जालौर, आमेर आदि किलों और अनेक प्रसिद्ध रण क्षेत्रों में कई बड़े-बड़े युद्ध हुए, जहां अनेक वीर राजपूतों ने वहां की मिट्टी का एक-एक कण अपने रक्त से तर किया और कई स्थानों पर राजपूत क्षत्राणियों ने शत्रु का सामना किया। सचमुच राजपूताना की धरती असाधारण रही है।इसीलिए कर्नल टोड को कहना पड़ा-राजस्थान में कोई छोटा सा राज्य भी ऐसा नहीं है जिस में थर्मोपल्ली जैसी रणभूमि ना हो और शायद ही ऐसा नगर मिले जहाँ लियोनीडाँस जैसा वीर पुरुष उत्पन्न न हुआ हो

राजस्थान का इतिहास यहां की लोक संस्कृति की कीर्ति कथाओं का बखान करता है। मनुष्य के जन्म से लेकर मनुष्य की मृत्यु तक के संस्कारों में लोक संस्कृति दृष्टिगत होती है। यहां के तीज त्यौहार और विवाहों के अवसर पर महिलाओं के नख-शिख श्रृंगार लोक संस्कृति को परिलक्षित करते हैं।व्रत त्योहार उत्सव मेले राजस्थानी लोक जीवन के अटूट अंग हैं। देवी देवताओं में अटूट विश्वास यहां के लोक समाज की विशेषता है। लोक जीवन की अनगिनत अनुभूतियों का उदात स्वरूप ही लोक संस्कृति है। लोक संस्कृति में आदर्श और नैतिक मूल्य और परंपराओं का समावेश है, जो नई पीढ़ी को शिक्षा देते है। लोक संस्कृति का स्वरूप लोक गीत, लोक गाथाओं और लोकनाट्य में सदियों की विरासत को समेटे हुए हैं।

****

# रानी की पहेली

**सर्वेश कुमार निगम**
वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

एक राज्य था। वहां का राजा बड़ा न्याय प्रिय और धर्मिष्ठ था। उसकी प्रजा सुखी थी और राज्य की सीमायें चारों ओर से सुरक्षित थीं, किंतु उसकी पत्नी का चरित्र कुछ ठीक नहीं था। उसे अपने घर में आने वाले एक इच्छा धारी सांप से प्यार हो गया। वह उस सर्प से छिप-छिप कर मिलने लगी। एक दिन उसने सर्प से कहा कि हम लोग छिप-छिप कर इस प्रकार कब तक मिलते रहेंगे। इस प्रकार के मिलन में पूर्ण आनंद भी प्राप्त नहीं होता। साथ ही राजा के आने या किसी के देख लेने का डर भी सदैव बना रहता है। अब दोनों राजा की हत्या करने का षडयंत्र रचने लगे। किंतु राजा के पास सदैव तलवार और सैनिक रहने के कारण उन्हें कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। किसी में राजा से टकराने की हिम्मत नहीं थी। तब सर्प ने रानी से कहा कि हम एक विषैले सर्प हैं। यदि हम राजा को काट लें तो वह तुरंत ही मर जाएगा। किंतु इसमें एक खतरा है कि यदि राजा ने हमें देख लिया तो वह तुरंत ही अपनी तलवार से हमारे टुकड़े टुकड़े कर देगा। फिर भी मेरी एक इच्छा है कि यदि हम राजा को काटने में असफल हो जायें और राजा हमें मार दें तो तुम्हें हमारी मृत्यु का बदला राजा से अवश्य लेना होगा।

रानी ने आश्वासन दिया कि राजा को काटने के दौरान यदि राजा द्वारा उसे देख लिया जाता है और राजा उसे मार देता है, तो वह राजा से उसकी मृत्यु का अवश्य बदला लेगी। फिर रानी ने अपनी दुष्ट बुद्धि का प्रयोग किया और एक दिन उसने अपनी सभी दासियों को छुट्टी दे दी और महल की ओर आने वाले रास्ते के सभी दीपक व मशालों को बुझा दिया। रात को राजा जब महल की ओर आने लगा तो उसने महल की सड़क पर अंधेरा देखकर रानी को आवाज लगाई और मशाल भेजने के लिए कहा। इस पर रानी ने व्यंग्य करते हुए राजा से कहा कि हुंह बड़े शूर-वीर बनते हो जरा सा अंधेरा क्या है, घर के अंदर आने से डरते हो, आ जाओ घर के सभी नौकरों को आज छुट्टी दे दी है, अभी मशाल लाने के लिए महल में कोई नहीं है। आप तो बच्चों की तरह डरते हो, जल्दी अंदर आओ।मैंने आज आपकी सुरक्षा के लिए व्रत रखा है। सुबह से कुछ नहीं खाया है। जल्दी आओ पूजा करके हमें भी खाना खाना है। भूख से हमारे तो प्राण ही निकले जा रहे हैं। इतना सुनते ही राजा महल की ओर तेज कदमों से चलने लगा और उधर पूर्व योजना के अनुसार वह सांप भी राजा को काटने के लिए तेजी से राजा की ओर रेंग कर आगे बढ़ने लगा। जैसे ही वह सर्प राजा के पास आया उसी समय सौभाग्य से राजा का एक मंत्री उधर से निकला। उसने अपनी मशाल से राजा के मार्ग पर प्रकाश कर दिया। मार्ग पर प्रकाश पडते ही राजा की दृष्टि आपनी ओर आते भयंकर सर्प पर पड़ी। राजा ने तुरंत म्यान से तलवार निकाली तथा सर्प के दुकडे-टुकड़े कर उसे मार दिया और मंत्री का धन्यवाद कर महल के अंदर गया।

महल में राजा को जीवित आया देखकर रानी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसे अपने प्रिय सर्प की कुशलता की चिंता सताने लगी। उसने सर्प के बारे में जानने के लिए राजा पर व्यंग्य करते हुए कहा हुंह बड़े डराये जाते थे-अंधेरा है, जैसे लूलू बाबा उठाय लइ जायेगा। कुछ हुआ क्या नहीं न।राजा उस सर्प और रानी की मिलीभगत से अनजान था। राजा ने कहा तुम्हें क्या पता, बस समझो कि तुम्हारी किस्मत से जीवित हैं। नहीं तो केवल मेरा मरा शरीर ही अंदर आता। यह सुनते ही रानी में बेचैनी बहुत बढ़ गई। उसने पूछा ऐसा

क्या हुआ। तब राजा ने बताया कि जब मैं महल की ओर बढ़ रहा था, उसी समय एक बहुत बड़ा और भयंकर सांप मुझे काटने के लिए मेरे पास आ गया, अच्छा हुआ कि उसी समय हमारा मंत्री वहां मशाल लेकर आ गया, नहीं तो वह मुझे काट ही लेता और मेरी मृत्यु निश्चित थी। यह सुनते ही रानी के कलेजे पर सांप लोटने लगे। वह राजा का कुछ बिगाड़ नहीं कर सकती थी। इसलिए वह चुप रही और अपने प्रिय सांप को देखने जाने के लिए उचित समय का इंतजार करने लगी। जैसे ही राजा लेटने के लिए गये वह तुरंत भागकर महल के बाहर आयी और मरे पड़े अपने आशिक सांप को देखकर दुःख से भर गयी। उसने उसके शरीर को उठाकर अपने आंचल में छिपा लिया और उसे लेकर महल में आ गयी और राजा से सर्प की हत्या का बदला लेने का मन बनाने लगी।

एक दिन जब राजा महल में आये तो देखा कि रानी बहुत दुखी है। राजा ने उससे उसके दुःख का कारण पूछा, पर वह कुछ न बोली। बहुत पूछने पर उसने कहा मेरी एक पहेली है, जिसे कोई बूझ नहीं पा रहा है। जब तक कोई इसे बूझ नहीं देता तब तक मुझे चैन नहीं आएगा। राजा ने कहा इसमें दुःखी होने की क्या बात है, मुझे बताओ, मैं बूझूंगा। इस पर रानी ने कहा कि पहेली ऐसे नहीं बताई जा सकती। इसके लिए एक शर्त है कि सुनने के बाद यदि कोई इसे बूझ नहीं पाता तो उसे अपने प्राण देने पड़ते हैं और यदि वह बूझ लेता है तो वह जो चाहे मुझे सजा दे सकता है। राजा, रानी की मनः स्थिति से पूर्णतः अनजान था। इसलिए उसने कहा ठीक है, मुझे तुम्हारी सभी शर्तें मंजूर हैं। शीघ्र अपनी पहेली बताओ। रानी ने कहा एक बार और सोंच लो यदि न बूझ पाये तो अपने प्राण देने होंगे। राजा के मन में था कि कोई पत्नी अपने पति का अहित नहीं सोच सकती। इसलिए राजा ने कहा ठीक है, ले लेना प्राण। पहेली बोलो। तब इस पर रानी ने कहा ठीक है, आप कहते हो तो मैं बोलती हूँ ध्यान से सुनना- "पिउ खटिया, पिउ मछिया, पिउ की ज्योति जले सारी रतिया, पिउ का हार पड़ा मोरी छतिया।" राजा को पहेली सुनने पर कुछ भी समझ नहीं आया, तो उसने रानी से कहा कि हमें तो कुछ भी समझ नहीं आ रहा है तुम्हीं बता दो। इस पर रानी ने अपनी शर्त की याद दिलाई और कहा कि यदि बूझ नहीं सकते तो मरने के लिए तैयार हो जाओ, इतना कहकर वह तलवार लेकर आ गई। अब राजा को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसे लगने लग गया कि रानी तो मुझे सही में मारना चाहती है। किंतु वह करे तो क्या करे, वह तो अपने वचन से बंधा हुआ है। उसने तो रानी को वचन दे रखा कि यदि वह पहेली न बूझ पाए तो वह उसे मार सकती है। अब राजा इस संकट से बचने का उपाय करने लगा। उसने रानी से कहा कि उसे इस पहेली को बूझने के लिए कुछ समय चाहिए। रानी ने समय देने से इनकार कर दिया। इस पर राजा ने दिमाग लगाया और कहा कि शर्त में ऐसा कुछ नहीं थी कि तुरंत जवाब देना है। राजा की युक्ति काम आयी और रानी समय देने के लिए तैयार हो गई। रानी ने पूछा कि पहेली बूझने के लिए आपको कितना समय चाहिए?

तब राजा ने कहा कि तीन महीने बाद रक्षाबंधन है। मैं रक्षाबंधन पर सदैव बहन के पास राखी बंधाने जाता हूं। अतः मैं चाहता हूं कि राखी के त्योहार तक का मुझे समय दिया जाए। राजा ने सोचा था कि शायद कुछ समय के बाद रानी की यह सनक खत्म हो जाए पर राजा ने देखा कि समय बीतने पर भी रानी के तेवर ढ़ीले नहीं पड़ रहे हैं। राजा को अपनी मृत्यु साफ दिखने लग गयी। राजा दुःखी रहने लगा। उसका मन राज-काज से हट गया। वह पहेली का हल खोजने के प्रयास में जी जान से जुट गया। उसने राजदरबार में अपने सभी मंत्रियों और सलाहकारों को इस पहेली को सुलझाने के लिए कहा किंतु कोई भी इस पहेली को सुलझा न सका। राजा ने राजदरबार में घोषणा कर दी कि जो भी इस पहेली को सुलझा लेगा उसे मुंह-मांग इनाम दिया जाएगा। समय बीतने लगा पर राजदरबार का कोई भी मंत्री इस पहेली को सुलझा न सका। धीरे-धीरे करके तीन महीने बीतने को आ गये। रानी ने पुनः राजा को याद दिलाया कि तीन महीने होने को आ रहे है। पहेली का हल मिला या नहीं? अगर तीन महीने में आप इसका हल ढूंढ लेते हो तो ठीक, नहीं तो मरने के लिए तैयार रहना! अब और समय बढ़ाने के लिए न कहना और तीन महीने बाद तुम्हारा कोई भी बहाना मेरे सामने नहीं चलेगा। इतना सुनते ही राजा की रूह अंदर से कांप गई। किंतु हिम्मत करके

बोला कि ठीक अभी तो कुछ दिन शेष हैं। तुमने रक्षा बंधन तक का मुझे समय दिया है। उसके बाद ही बात करना। रानी चुप हो गयी। किंतु राजा को अब अपने प्राण बचाने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा था।

धीरे-धीरे राखी का त्योहार भी आ गया। उस दिन रानी सुबह-सुबह ही राजा के पास आयी और बोली कि आज आपका अंतिम दिन है। राजा ने कहा ठीक है मैं अपनी बहन से राखी बंधा कर आता हूं, फिर तुम मुझे मार देना। रानी ने मुंह चिढ़ाते हुए कहा ठीक है। जल्दी जाओ और शीघ्र घर आ जाना, ज्यादा देर मत करना मुझे और भी बहुत काम है। अब राजा करे तो क्या करे, वह बुझे मन से अपनी बहन के घर चल दिया। दोपहर के पहले-पहले वह अपनी बहन के घर पहुंच गया। बहन ने अपने भाई को यूं उदास देखकर पूछा भइया क्या हुआ? राज्य में सब ठीक तो है। राजा ने बताया कि राज्य में तो सब ठीक है, पर यह हमारी आखिरी राखी है। इसके बाद शायद हम तुमसे कभी न मिल सकें। जल्दी से राखी बांध दो, हमें शीघ्र घर जाना है। अपने भाई को यूं उदास देखकर उसे बहुत दुःख हुआ और उसने अपने भाई से इस प्रकार की बातों का कारण पूछा। तब राजा ने बताया कि तुम्हारी भाभी ने मुझसे एक पहेली पूछी है और यह शर्त रखी थी कि यदि मैं इसे बूझ न पाया तो वह मुझे मार देगी और मैंने मूर्खतावश उसे वचन दे दिया।

यह सुनकर राजा की बहन को इन बातों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने राजा से कहा कि आप दुःखी न हों कई भी पत्नी अपने पति को नहीं मार सकती। वह जरुर मस्खरी कर रही होगी और आप सच मान कर दुःखी हो रहे हैं। आप ही सोचें कि कहीं कोई पत्नी अपने पति को मार सकती है क्या? चलिए, हाथ-मुंह धोइये, अभी राखी भी तो बांधनी है। तब राजा ने उसे बताया किपहले मैं भी यही सोचता था, पर यह मस्खरी नहीं, पूर्णतः सच है। वह तो उसी दिन तलवार लेकर मेरी गर्दन काटने आ गयी थी। किंतु मैने राखी तक का समय मांग लिया था। सोचा था कि इस बीच सब ठीक हो जायेगा। पर स्थिति वैसी की वैसी है। उसने बताया कि राजदरबार में भी कोई भी इस पहेली को बूझ नहीं पाया। उसकी बहन ने पूछा कि बताओ ऐसी कौन सी पहेली है। तब राजा ने बताया कि रानी ने "पिउ खटिया, पिउ मछिया, पिउ की ज्योति जले सारी रतिया, पिउ का हार पड़ा मोरी छतिया" इस पहेली को बूझने के लिए कहा है। राजा की बहन को भी कुछ समझ न आया। उसने राजा से कहा कि वह भी उनके साथ महल चलेगी और रानी को समझायेगी। राजा ने कहा कि उसे तो मुझे मारने का भूत सवार है, वह तुम्हारी कुछ न सुनेगी। इस पर राजा की बहन ने कहा कि वह चलकर प्रयास करेगी।

राजा के बहुत मना करने पर भी उसकी बहन न मानी और राजा के साथ राजमहल की ओर चल दी। धीरे-धीरे राजमहल के पास आने लगे। दिन का करीब तीसरा पहर चल रहा था। दोनों महल के काफी करीब पहुंच चुके थे। इसी बीच राजा की बहन को प्यास लगने लगी। उसने सोचा कि ऐसी जल्लाद औरत जो मेरे भाई की हत्या करने वाली हो के हाथ का छुआ न तो कुछ खा सकती है और न ही उसका छुआ पानी ही पी सकती है। इसलिए उसने राजमहल पहुंचने के पहले कहीं और पानी पीने का निश्चय किया। उसने देखा कि कुछ ही दूर पर कुछ औरतें कुएं से पानी भर रहीं हैं। वह पानी पीने के लिए राजा के साथ वहां गयी और पानी देने का आग्रह किया। पानी भरने वाली उन औरतों में एक राजभवन की नौकरानी भी थी। उसने राजा और उसकी बहन को पहचान लिया। अपने प्रजापालक राजा को अपने बीच पाकर सब बड़े खुश हुए और दोनों की बहुत आवभगत की तथा पानी दिया। इसी बीच राजा की नौकरानी ने राजा की बहन से पूछा कि देवी राजभवन तो बहुत निकट है फिर यहां आकर पानी पीने का क्या प्रयोजन है।

तब राजा की बहन ने बताया कि रानी आज रात राजा को मार देगी। मैं ऐसीजल्लाद औरत के हाथ का छुआ कैसे कुछ खा या पी सकती हूँ। वह कुछ समझ न पाई। उसने राजा की बहन से विस्तार से सारी बात बताने को कहा। राजा की बहन ने उसे पहेली की सारी बात विस्तार से बतायी। वह तो महल में साफ-सफाई का काम करती थी। उसने राजा की बहन से कहा कि मैं भी कुछ दिनों से रानी के व्यवहार में बड़ा परिवर्तन देख रही हूं। वह घर में साफ सफाई नहीं करती। हम लोगों को भी बहुत ही कम अपने भवन के

अंदर आने देती है। मैं कुछ ठीक से तो नहीं कह सकती, किंतु मैने देखा है कि रानी की चारपाई में गद्दे के नीचे मरे सांप का एक टुकड़ा पड़ा हैतथा खाट के पाये पर भी मरे सांप का एक टुकड़ा बंधा है और एक दिन मैने देखा कि दिया में भी सांप का एक टुकड़ा पड़ा था, किंतु रानी ने उसे साफ करने से मना कर दिया था। जब मैने इस बारे में रानी से पूछा तो उसने हमें डांटा और अपना काम करने को कहा।

उसी दिन से उसने मुझे काम से भी निकाल दिया है। नौकरानी ने बताया कि हो न हो उसके हार में भी सांप का टुकड़ा बंधा हो। नौकरानी द्वारा यह संकेत पाकर राजा और राजा की बहन को बड़ा संतोष मिला। थोड़ी ही देर में दोनो महल पहुंच गये। रानी ने राजा की बहन का सत्कार किया और राजा से मृत्यु का वरण करने के लिए तैयार होने को कहा। राजा की बहन ने रानी को बहुत समझाया किंतु वह तो अपनी बात से टस से मस न हुई। उसके तो दिल में बदले की आग सुलग रही थी। राजा की बहन ने कहा कि यदि वह इसके भाई को मारेगी तो वह ऐसे घर में पानी भी नहीं पी सकती। फिर भी रानी नहीं मानी। वह तो राजा की हत्या करने के लिए बहुत उतावली हो रही थी।

राजा की बहन ने रानी से कहा कि वह उससे भी पहेली पूछ ले। इसपर रानी ने कहा कि मुझे आपसे कोई बैर नहीं है। वह उसके और राजा के बीच के झगड़े में न पड़े। राजा की बहन न मानी और बोली कि वह उससे भी पहेली पूछे। तब रानी ने कहा कि पहेली की शर्त है कि यदि तुम बूझ लोगी तो तुम हमें मरवा देना और यदि न बूझ पाई तो मैं तुम्हें राजा के साथ ही मरवा दूंगी। राजा की बहन ने तुरंत ही रानी की शर्त मान ली। अब रानी ने अपनी वही पहेली "पिउ खटिया, पिउ मछिया, पिउ की ज्योति जले सारी रतिया, पिउ का हार पड़ा मोरी छतिया" को पुनः दोहराया। इतना सुनते ही राजा की बहन ने उसके बिस्तर का चादर हटाया और दिखाया कि एक सांप का टुकड़ा यहां पड़ा है। जिसे तुम पिउ खटिया कहती हो। फिर उसने झुककर इसकी खाट उठा दी और वहां भी दिखाया कि मछिया पर सांप का एक टुकड़ा बंधा था। उसने कहा देखो यह पिउ मछिया है। फिर राजा की बहन दीपक के पास गयी जो बहुत ही गंदा था जैसे महीनों से उसे साफ न किया गया हो। इसने उसका तेल वहीं गिरा दिया और बताया कि देख यही तेरी पिउ की जोत जले सारी रतिया है। फिर राजा की बहन ने रानी के ब्लाउज को पकड़ कर जोर से खींच दिया, जिससे ब्लाउज तुरंत ही खुल गया। उसे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि वहां भी मृत सांप का एक टुकड़ा पड़ा था। अब उसने बताया कि देख यही तेरा पिउ है और यही पिउ का हार पड़ा मोरी छतिया है।

राजा की बहन द्वारा पहेली बूझे जाने से रानी भौंचक्की सी रह गयी और सुन्न पड़ गयी। थोड़ी देर में होश आते ही रानी ने राजा और और उसकी बहन से क्षमा मांगी और कहा कि वह चाहें तो उसे मरवा सकते हैं। इसपर राजा की बहन ने कहा कि वह उसकी तरह जल्लाद नहीं है। इसलिए वह रानी को मृत्यु दंड तो नहीं देगी किंतु उसने रानी से कहा कि उसका दंड यही है कि वह देश छोड़कर चली जाए और फिर कभी इस देश में न आये।

---

# बचपन

**हरिनंदन ठाकुर**
वरिष्ठ लिपिक, बिजली विभाग,मुख्यालय

एक दौर था जब हम खुश रहते थे,
छोटी-छोटी बातों  से,
एक दौर ऐसा अब आया है,
हम लड़ते तन्हा रातों से।

ये समय बदला या हम बदले,
ये निर्णय करना मुश्किल है,
पर उस दौर को पाने की खातिर,
बैचेन ये मेरा दिल है।

चाहता हूं कि लौट जाऊँ फिर से,
उन प्यारे लम्हों में,
उन मिट्टी के हाथी घोड़े, और
उन मिट्टी के महलों  में।

राजा हो रंक भिखारी हो,
सबको ये कहते देखा है ,
उनकी यादों के पन्नों पर
“बचपन” की स्वर्णिम रेखा है।

---

# असम

**आर. इन्दुबाला**

आशुलिपिक ग्रेड –I,बिजली विभाग, मुख्यालय

असम पूर्वोत्तर का प्रवेश द्वार माना जाता है। इसकी लुभावनी सुंदरता, दुर्लभ वनस्पति तथा जीवों, हरी-भरी पहाड़ियों, विशाल जलमार्गों और मेलों तथा त्योहारों के कारण यह अत्यंत लोकप्रिय है। पुरातन कथाओं के अनुसार इसे प्राग्ज्योतिशा तथा कामरूप की राजधानी माना जाता था। इसमें प्रमुख रूप से आधुनिक असम, आधुनिक बंगाल और आधुनिक बांग्लादेश के कुछ हिस्से शामिल थे। अहोम लोगों द्वारा असम को जीत लिया गया। उसके बाद इसका नाम असम बना। असम केंद्रीय भारत से बांग्लादेश द्वारा लगभग अलग होता है। इसकी पूर्वी सीमा पर नागालैंड, मणिपुर और म्यानमार हैं, पश्चिम में पश्चिम बंगाल है, उत्तर में भूटान और अरुणाचल प्रदेश और दक्षिण में मेघालय, बांग्लादेश, त्रिपुरा और मिजोरम है। यहां पर विशाल नदी ब्रह्मपुत्र बहती है, जो विश्व की सबसे महान नदियों में से एक है जो असम को बहुत ही उपजाऊ बनाती है।

**राजधानी:**

ब्रह्मपुत्र के दोनों तटों पर फैला हुआ है गुवाहाटी। माना जाता है कि यह राजा नरकासुर द्वारा स्थापित किया गया था। यह एक व्यस्त तथा भीड़-भाड़ वाला शहर है। यह पूर्वोत्तर की वाणिज्यिक राजधानी है।

**वैश्विक जैव-विविधता "हॉटस्पॉट":**

यह एक वैश्विक जैव-विविधता "हॉटस्पॉट" (Global bio-diversity hotspot) है। यहां पर 41 सूचीबद्ध लुप्तप्राय वन्य जीव (Listed endangered wildlife) प्रजातियाँ पाई जाती हैं जिनमें से गोल्डन लंगूर, हूलोक्क लंगूर, पिग्मी सूअर, हिस्पिड खरगोश, सफ़ेद पंखों वाली वुडडक, बाघ, क्लाउडेड तेंदुआ आदि शामिल हैं।

**निवासी**

असम के सबसे पहले निवासी संभवत: ऑस्ट्रिक नस्ल के थे। इन्हें "प्रोटो-ऑस्ट्रोलोइड" कहा जाता है क्योंकि उन्हें ऑस्ट्रेलिया और प्रशांत महासागर के कुछ अन्य द्वीपों से एशिया की मुख्य भूमि पर आकर बस गया माना जाता है। ऑस्ट्रिक लोगों के बाद मोंगोलोइड असम में प्रविष्ट हुए थे। मोंगोलोइड लोगों में से बोडो जनजाति आई और ये शुरू में ही ब्रह्मपुत्र घाटी में आकर बस गए। कछारी जो बोडो जनजाति के हैं, कभी बहुत शक्तिशाली थे। ऐसा माना जाता है कि एक समय में वे पूरे असम पर राज करते थे। 13 वीं शताब्दी में जब अहोम आए तब कछारी और चुटिया पूर्वी असम के एक बड़े भाग पर शासन कर रहे थे। उसके बाद आर्य आए।

**पर्व:**

असम में मनाए जाने वाले प्रमुख त्योहार हैं बिहु-भोगली अथवा माघबिहु (जनवरी),रोंगाली अथवा बोहगबिहु (अप्रैल) और कोंगाली अथवा कतिबिहु (मई) जिन्हे पूरे असम में सभी जाति, पंथ तथा धर्म के लोगों द्वारा मनाया जाता है। अन्य त्योहार हैं बैशागु (अप्रैल के मध्य में बोडो कछारी लोगों द्वारा मनाया जाता है),आली-आई-लिगांग (मिशिंग जनजाति का त्योहार, फरवरी-मार्च), बाइखो (रभा जनजाति, बसंत के मौसम में), रोंगकेर (कार्बी लोगों का महत्वपूर्ण त्योहार, अप्रैल) रजिनी गबरा और हरनी गबरा (दिमासा

जनजाति), बोहागियो बिशु (देवरी लोगों का बसंत ऋतु का त्योहार), अंबुबाशी मेला (कामाख्या मंदिर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण त्योहार प्रति वर्ष जून के मध्य में मनाया जाता है। इनके अलावा असम के लोग जन्माष्टमी (अगस्त), दुर्गापूजा (अक्तूबर), दिवाली, ईद, मुहर्रम भी मनाते हैं।

**नदियाँ:**

इस राज्य की प्रमुख नदी ब्रह्मपुत्र है जो लगभग पूर्व पश्चिम में प्रवाहित होती हुई धुबरी के निकट बंगलादेश में प्रविष्ट हो जाती है। प्रवाह क्षेत्र कम ढलवाँ है , इसके कारण नदी शाखाओं में विभक्त हो जाती है तथा द्वीपों का निर्माण करती है जिनमें माजुली विश्व का सबसे बड़ा नदी स्थित द्वीप है। वर्षा काल में नदी का जल मार्ग कहीं कहीं 8 कि॰मी॰ चौड़ा हो जाता है तथा झील जैसा प्रतीत होता है। इस नदी की 35 प्रमुख सहायक नदियाँ हैं। इनमें से कुछ हैं सुवंसिरी, भरेली, धनसिरी, पगलडिया, मानस , लोहित, नवदिहिंग, बूढ़ीदिहिंग, दिसांग, कपिली, दिगारू आदि । दक्षिण में सूर माही उल्लेख्य नदी है जो अपनी सहायक नदियों के साथ कछार जनपद में प्रवाहित होती है। भूकम्प तथा बाढ़ असम की दो प्रमुख समस्याएँ हैं। बाढ़ से प्राय: प्रतिवर्ष 8 से 10 करोड़ रुपए की माल की तबाही होती है।

**असम का पारंपरिक शिल्प:**

**वस्त्र:**

यहां मिलने वाले दुर्लभ मुगा सिल्क के लिए यह क्षेत्र काफी प्रसिद्ध है। असम में पाये जाने वाले एक खास किस्म के रेशम के कीड़े से तैयार किया जाने वाला मुगा सिल्क पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। इस सिल्क से बनी साड़ियां अपनी चमक और टिकाऊपन के लिए प्रसिद्ध हैं। आप जितनी बार यह साड़ी धोते हैं उतनी बार इसकी प्राकृतिक चमक बढ़ती जाती है। इस सिल्क का इस्तेमाल पारंपरिक असमी वेशभूषा में भी किया जाता है जिसे यहां की महिलाएं इच्छा से पहनती हैं। पूरे गुवाहाटी में मुगा सिल्क साड़ियों की अनेकों दुकानें पाई जाती हैं और यहां पर सैलानियों की भीड़ रहती है।

**सत्रीयानृत्य:**

भारत के प्रसिद्ध आठ शास्त्रीय नृत्यों की विधाओं में से एक है सत्रीयानृत्य, जिसे असम का गौरव कहा जाता है। इस नृत्य में हाथों और आंखों की मुद्रा-भंगिमाओं का विशेष इस्तेमाल होता है। गुवाहाटी में विश्व के सबसे सम्माननीय और चुने हुए सत्रीय कलाकार रहते हैं जो अपनी विशेष नृत्य शैली के माध्यम से पौराणिक कथाओं को प्रस्तुत करते हैं।

**मुखौटे:**

स्थानीय भाषा में मुख कहे जाने वाले ये मुखौटे असमी सभ्यता एवं संस्कृति के प्राचीन अंग हैं। लोक कथाओं को नाटक के रूप में प्रस्तुत करते हुए प्रमुख रूप से इनका उपयोग किया जाता है। सामान्यतः टैराकोटा, धातु, बांस और लकड़ी से बने ये मुखौटे स्थानीय देवी-देवताओं के स्वरूप में बनाए जाते हैं, जिन्हें रंगों और नक्काशी से सजाया जाता है। इन मुखौटों में महाभारत और रामायण जैसे धार्मिक ग्रंथों के पात्र मुख्य रूप से बनाए जाते हैं। असम के गांवों में रहने वाले लोगों के लिए मुखौटे बनाने की यह कला जीवनयापन का रास्ता है। एक मुखौटा बनाने में कलाकार को करीब 10 से 15 दिन का समय लग जाता है जिसमें वह बांस की पतली-पतली पट्टियों से पहले मुखौटे का ढांचा तैयार करता है और फिर उस पर मिट्टी में भिगोये हुए छोटे-छोटे कपडों के टुकड़ों को छिपकाता है। ढांचा तैयार होने के बाद उसे धूप में अच्छी तरह से सुखाया जाता है और सूखने के बाद रंगों से खूबसूरत डिजाइन बनाए जाते हैं।

**जपी:**

असम आने वाले पर्यटक यहां से सिर पर पहनने वाली एक विशेष प्रकार की टोपी सबसे ज्यादा लेकर जाते हैं, जिसे जपी या जापी कहते हैं। असम के लोगों के लिए तो यह टोपी है लेकिन विदेशी पर्यटकों के लिए यह एक सजावट की वस्तु है जिसे वे चाव से पहनते हैं। असम आने वाले सभी प्रसिद्ध और गणमान्य व्यक्तियों को यह टोपी सम्मान के रूप में भेंट की जाती है। पवित्र धार्मिक अनुष्ठानों से लेकर उत्सवों में नृत्य करते बिहु लोकनृतक तक सभी सिर पर इसे पहनते हैं।

**पर्यटन के रूप से प्रमुख स्थान:**

**माजुली:**

ब्रह्मपुत्र नदी पर दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा मीठे पानी का द्वीप है माजुली । माजुली जोरहाट जिले में स्थित है और ब्रह्मपुत्र नदी इसे असम से अलग करती है।

**काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और टाइगर रिजर्व:**

भारत में एक सींग वाले गैंडे(One horned Rhino) को देखना है तो आपको यहां जाना होगा। 430 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले इस नेशनल पार्क को वर्ष 1985 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। ऐसा कहा जाता है कि जब भारत के वायसराय लॉर्ड कर्जन की पत्नी मैरी कर्जन एक सींग वाले गैंडे को देखने यहां आयी थीं तब उन्हे एक भी गेंडा देखने को नहीं मिला। फिर उन्होंने अपने पति को घटती प्रजातियों की रक्षा के लिए तत्काल कदम उठाने के लिए राजी किया और तभी जाकर इसकी स्थापना हुई।

काजीरंगा पार्क का वन क्षेत्र भारतीय गैंडों की दुनिया की सबसे बड़ी आबादी का घर है। अन्य जानवर जैसे बाघ, तेंदुआ, भारतीय हाथी, स्लॉथ भालू, जंगली जल भैंस, दलदली हिरण आदि भी इधर पाए जाते हैं। हर साल बाघों की आबादी में वृद्धि के साथ सरकार ने वर्ष 2006 में काजीरंगा को टाइगर रिजर्व घोषित किया था।

**तिनसुकिया:**

तिनसुकिया में कई प्रमुख शॉपिंग मॉल हैं।, भारत के सबसे बड़े राष्ट्रीय उद्यानों में से एक है डिब्रू-सैखोवा राष्ट्रीय उद्यान जो तिनसुकिया में स्थित है। तिलिंगा मंदिर (बेलमंदिर) तिनसुकिया शहर के बाहरी इलाके में स्थित एक प्रसिद्ध मंदिर है। एशिया की सबसे पुरानी रिफाइनरी डिगबोई रिफाइनरी भी यहां स्थित है। भारत का एक मात्र कोयला संग्रहालय तिनसुकिया जिले के मार्गेरिटा शहर में स्थित है।

इस प्रकार देखा जाए तो असम अपने वन्य पशु अभयारण्यों तथा पर्यटन स्थलों के कारण देश का एक प्रमुख पर्यटन क्षेत्र बन गया है जिसका दौरा करना सभी सैलानी चाहेंगे। फुरसत मिले तो आप भी यहां की सैर के लिए अपना कार्यक्रम बना लीजिए ।

---

# राजधानी की सैर

**एम. गीता**
मुख्य वाणिज्य लिपिक, वाणिज्य विभाग

मैंने अपने पति और बेटी के साथ राजधानी और उसके आसपास के शहरों का सैर किया था। राजधानी की सैर के बारे में मैअपना अनुभव शेयर करना चाहती हूँ।

हमने चेन्नै से राजधानी जाने के लिएराजधानी एक्सप्रेस में आरक्षण करवाया था। राजधानी एक्सप्रेस में AC (एसी) क्लास में यात्रा की । सुबह यह गाड़ी निकली और अगले दिन हजरत निजामुदिन पहुंची। इस गाड़ी में यात्रा करनेमें बहुतमजा आता है क्योंकि इस गाड़ी का एपीयरेन्स और उपलब्ध खाना बहुत अच्छा है। आइए मैं इस गाड़ी की यात्रा के कुछ अनुभवों को शेयर करती हूँ।

गाड़ी के अंदर पहुंचते ही हमारी सीट पर एक लीटर का पानी का बोतल और उस दिन का अखबाररखा हुआ मिला। उसके बाद गाड़ी के प्रस्थान होने के बाद कुछ ही समय में फूड मैन्यू दिया गया। पहले चाय या काफी और बिस्कुट का आनंद ले सकते हैं और हमने चाय और बिस्कुट लिया। कुछ देर बाद नाश्ते के मैन्यू में थे कॉर्नफ्लैक्स दूध के साथ, ब्रेड बटर, वेज कटलेट, पराठा, इडली, वड़ा, उपमा, ऑमलेट, फिंगर चिप्स, फल रस । यह मैन्यू हर रोज बदलता रहता है। नाश्ते के बाद लंच और डिनर के लिए भी अलग Menu है, जिसमें अच्छा शाकाहारी और मांसाहारी भोजन मिलता है। इस गाड़ी में यात्रा करते समय हमें महसूस हुआ कि हम अपने ही घर में रह रहे हैं, क्योंकि वातावरण ऐसा था।समय पर खाना हमारे टेबल पर ही आ जाता है। अगले दिन हजरत निजामुद्दीनपहुंचने के बाद हम होटल में गए औरकुछ ही देर में हम राजधानी में Sightseeingके लिए निकले। आपको मालूम होगा कि हम नई दिल्ली का ही सैर कर रहे थे। पूरा दिन घूमने के बाद हम रात को होटल पहुंचे और अगले दिन हम आगरा सैर करनेनिकले। हम 06.00 बजे की गाड़ी से निकले और 10.00 बजे आगरा स्टेशन पहुंचे और वहाँ से हम सड़क मार्ग से ताजमहल देखने गए। इसके अलावा आगरा में हमने आगरा का किला, जामा मस्जिद, मोती मस्जिद, फ़तेहपुर सीकरी, अकबर का मकबरा आदि स्थानों का लुत्फ उठाया।

आगरा की सैर के अगले दिन हम मथुरा गए। वहाँ श्रीकृष्ण जन्मभूमि एवं द्वारकाधीश मंदिर देखे। फिर उसके बाद गोकुल गए और वहाँ चिंता हरण मंदिर, रमणरेती मंदिर और ब्रह्माण्ड घाट देखा। वृन्दावन में इस्कॉन मंदिर, बांके बिहारी जी मंदिरदेखे।इसके बाद हमफिर से नई दिल्ली लौटे। हमें तो वापसी यात्रा के बीच एक दिन का समय था और हम दिल्ली में कुछ खरीददारी करने के बाद जब होटल में आये, तबहोटल वाले ने बताया कि आपकी गाड़ी कल है, इसलिए आप नोएडा या गुरुग्राम का भी सैर कर सकते हैं। इसके बाद हमने नोएडा का सैर किया। पहले हम वंडर वॉटर पार्कऔर उसके बाद The Great India palace, Okhla Bird Sanctuary, Stupa art gallery, Atta Market जैसे बहुत सारी जगहों का सैर किया था। हमारे पास और भी समय था, इसलिए हमने गुरुग्राम का भी सैर किया। वहाँ हमने साई का आंगन मंदिर, रंगमंच फार्म, शीतला माता मंदिर, सुलतानपुर राष्ट्रीय पार्क और बहुत सारे बड़े-बड़े माल भी देखे। हम इसके बाद नई दिल्ली से फिर से राजधानी एक्सप्रेस से चेन्नै पहुंचे। यात्रा शायद सभी के लिए सुखदायक है।

# दो मिनट में दक्षिण रेलवे का दीदार कराता हूँ(कविता)

**विकाश कुमार शर्मा**
कार्यालय अधीक्षक, भंडार विभाग, मुख्यालय

**(1)**

साहब! बस, दो मिनट दीजिए, पूरी दक्षिण रेलवे का दीदार कराता हूँ
चेन्नै-त्रिची-मदुरै, पालघाट-त्रिवेन्द्रम् और सेलम डिविजन का सफर करा देता हूँ
बस, दो मिनट का समय दीजिए, पूरी दक्षिण रेलवे घुमाकर लाता हूँ
इतने में ही रामेश्वरम के राम सेतु का अवशेष दिखा देता हूँ
ज्योतिर्लिंग और पाम्बन् ब्रिज का दर्शन भी करा देता हूँ
दिखाता हूँ दो मिनट की दूरी पर स्थित ए पी जे अब्दुल कलाम की महान जन्मस्थली को
बस दो मिनट दीजिए, बस दो मिनट, पूरी दक्षिण रेलवे का दीदार करा देता हूँ
मदुरै के मीनाक्षी मन्दिर में माता जी का दर्शन भी करवाता हूँ
बस दो मिनट में, दो मिनट में ही पूरी दक्षिण रेलवे का सफर कराता हूँ।।

प्रशिक्षित, समर्पित और अनुभवी कर्मचारी हैं हमारे पास,
केन्द्रीय कर्मशाला में बनता भाप इँजन दिखा देता हूँ
कभी तेल से तो कभी उसे कोयले से चला देता हूँ
मेट्टुप्पालयम से कुन्नूर-ऊटी तक टॉय ट्रेन से लोगों का मनोरंजन करा देता हूँ
चाय-बागान और ऊँची-नीची हरी-भरी वादियाँ दिखा देता हूँ
बस दो मिनट दीजिए, पूरी दक्षिण रेलवे का दीदार कराता हूँ
बस दो मिनट दीजिए, घुमाता हूँ कन्याकुमारी का सँगम
और रॉक मेमोरियल भी दिखाता हूँ
दिखाता हूँ गांधी मंडपम और दक्षिण भारत का सैर  कराता हूँ
बस दो मिनट तो दीजिए, पांडिचेरी का फ्रांसिस कॉलोनी दिखाता हूँ
दिखाता हूँ चेन्नै का मेरिना बीच और महाबलीपुरम भी घुमाकर लाता हूँ।।

साहब!  उपनगरीय, एक्सप्रेस, सुपरफास्ट और प्रीमियम ट्रेन पर जब चढ़ियेगा न ,
तब खुद ही गुनगुनाने लगियेगा,
रेल हमारा साथी है, हम सब को यह भाती है
सस्ता-सुलभ यात्रा कराती है
न्यूनतम् दर पर माल ढुलाई करती है।।

सबकुछ देखने के बाद टोन में ही परिवर्तन हो जाएगा और कहिएगा-
सुरक्षा, संरक्षा और समय पालन है भारतीय रेल का मूल मंत्र
इसके पास है बेजोड़ तंत्र
किसी का नहीं चलता यहाँ षड्यंत्र

बस दो मिनट और GOC में, दो मिनट में ही 2000 वृक्षारोपण होते देखा है
मैंने तो दो मिनट ही बोला है, केरल अभी बाकी है
यह तो पर्यटन स्थल का ही गढ़ है

लेकिन एक बात बताना चाहता हूँ
भाषा की कोई बात नहीं, यात्रियों को कभी शिकायत का मौका नहीं
अंग्रेजों ने अंग्रेजी दी, प्रचलन अभी तक समाप्त हो न सका
हिन्दी तो भारतीय रेल के सर्वत्र का साथी है
क्षेत्रीय भाषाओं को भी साथ लेकर चल रही है
बस, दो मिनट, पूरी दक्षिण रेलवे का दीदार करा देता हूँ
साहब! बस दो मिनट, पूरी दक्षिण रेलवे का दीदार करा देता हूँ

(2)

## हमारा बिहार प्यारा बिहार

हमारा बिहार प्यारा बिहार, देश की रीढ़ कहलाता बिहार
जहाँ तक देखें, दूर-दूर तक नजर आता बिहार
उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम, देश के कोने-कोने में दिखता बिहार
अशोक महान - शेर शाह सूरी की भूमि कहलाता बिहार
विश्व को गणतंत्र का प्रथम पाठ पढ़ाने वाला कहलाता बिहार
वीर कुँअर - राजेन्द्र महान देनेवाला कहलाता बिहार
हमारा बिहार प्यारा बिहार, देश की रीढ़ कहलाता बिहार

संसार को शून्य देने वाले आर्यभट्ट से प्रचलित बिहार
समाज सुधारक जयप्रकाश नारायण का कहलाता बिहार
महात्मा गाँधी की प्रथम सफल सत्याग्रह और भारत छोड़ो आँदोलन वाला कहलाता बिहार
हमारा बिहार प्यारा बिहार, देश की रीढ़ कहलाता बिहार

आइये बिहार, देखिए बिहार
देश विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता बिहार,
बिहार-बिहार-बिहार, सबसे प्यारा अपना बिहार
भारतीय रेल में सर्वाधिक कर्मचारी देने वाला कहलाता बिहार
देश सेवा में जाने को दिन-रात तड़पता रहता बिहार
जहाँ भी देखें, सभी जगह नजर आता बिहार
हमारा बिहार प्यारा बिहार, देश की रीढ़ कहलाता बिहार

उत्तर वाहिनी गँगा बहने वाला कहलाता बिहार
बुद्ध-महाबीर से प्रख्यात होता बिहार
गुरु गोविंद सिंह की जन्मस्थली कहलाता बिहार
देश-विदेश के आँतरिक-बाह्य दुश्मनों को धूल चटाता बिहार
मेरा बिहार आपका बिहार, हम सबके अच्छे कार्य से प्रसिद्ध होता बिहार

हमारा बिहार प्यारा बिहार, देश की रीढ़ कहलाता बिहार

ट्रेन में भीड़ हो तो लोग समझ जाते, यह ट्रेन जाने वाली है बिहार
देश के कोने-कोने से रेलगाड़ी जाती बिहार
आप भी आइये ना हमारा बिहार,
दिखाऊँगा, अब तक कितना बदल चुका है बिहार
प्राचीन नालन्दा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय वाला बिहार
राजगीर-मँदार का दीदार कराता बिहार

आप सभी के प्रदेश में हम सब तो आते रहते हैं,
ओढ़नी सहित बिहार के 121 बाँध और डैम की सैर कराते हैं
आइये कभी घूमने बिहार
दिखाते हैं अपना बिहार, कितना प्यारा है बिहार।

बच्चों से बात कीजिए, जीके भी पूछिए
हिंदी-खोरठा-अँगिका, भोजपूरी-मैथिली में ही पूछिए
अपनी बातों से आपको ही आकर्षित कर लेगा,
कुछ पल में ही पूरी दुनियाँ घूमा देगा
आप पर अपना प्यार वर्षा देगा
आईये न, कभी हमारा बिहार

बहन शारदा सिन्हा की लोक गीत सुनाते हैं
मैथिली की मिथला गीत और नेहा की भोजपुरी भी सुनाते हैं
क्रिकेटर इशान, मुकेश और पृथ्वी का गाँव भी दिखाते हैं
एक बार आइये तो सही, यहाँ का लीची भी चखाते हैं।
यहाँ का तिलकुट-पेड़ा सहित पटना के महाबीर मँदिर का प्रसाद भी खिलाते हैं
सर्वाधिक महत्व के छठ पर्व का भक्तिमय बिहार दिखाते हैं
आइये कभी होली में, मिलकर रंग-गुलाल भी खेलते हैं
फागुन का फगुआ भी सुनाते-सुनाते संपूर्ण बिहार घूमाते हैं।
लिट्टी-चोखा और अनरसा खिला कर मधुवनी पेंटींग दिखाते हैं
दिखाते हैं दशरथ माँझी द्वार और गोलघर पर चढ़ाते हैं
आइये कभी हमारा बिहार, देश प्रगति में योगदान करता बिहार
हमारा बिहार प्यारा बिहार, देश की रीढ़ कहलाता बिहार
हमारा बिहार, जय बिहार
जय बिहार, जय-जय बिहार

***

# स्वयं से करें प्यार तो जीवन में होंगे चमत्कार !

**वी.पूर्ण कामेश्वरी**
वरिष्ठ आशुलिपिक, परिचालन विभाग, मुख्यालय

*"जिसे खुद से प्यार हो जाता है उसका कोई प्रतिद्वंद्व नहीं होगा।"*

**बेंजामिन फ्रैंकलिन** की इस बात को दोहराते हुए मैं इस विषय पर अपने विचारों को प्रस्तुत करना चाहती हूँ।

साधारणतया जब हम स्वयं से प्रेम करने की बात कहते हैं तो उसका अर्थ आत्मप्रीति या आत्मप्रेम होता है। **इसे** "स्वयं के प्रति प्रेम" या "अपनी सुख या लाभ हेतु सम्मान" के रूप में परिभाषित किया गया है। असल में इसे एक मौलिक मानवीय आवश्यकता और एक नैतिक दोष, घमण्ड और स्वार्थ, दम्भ, अहंकार, आत्मरति, आदि का पर्यायवाची के समान माना गया है। यद्यपि, इस शताब्दी में आत्मप्रीति ने गौरव परेड, स्वाभिमान आन्दोलन, हिप्पी युग, आधुनिक नारीवादी आन्दोलन के साथ-साथ मादक द्रव्यों के सेवन और आत्महत्या के प्रतिरोध हेतु कार्य करने वाले स्व-सहायता समूहों हेतु आत्मप्रीति को आंतरिक रूप से बढ़ावा देने वाली मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता आदि के माध्यम से अधिक सकारात्मक अर्थ अपनाया है।

परंतु मैं इस बात से निश्चित सहमत हूँ कि आत्मप्रेम से ही मनुष्य के अंदर सकारात्मक मानसिकता बनी रहती है। जो व्यक्ति आत्म सम्मानित होता है, वही दूसरों को भी सम्मान कर सकता है। इस विषय पर पूर्ण रूप से आलोचना करने के लिए कि आखिर यह आत्म प्रेम होता क्या है, चलिए हम आत्म प्रेम का परिचय लेते हैं।

बचपन से हमे ये सिखाया जाता है कि हमें दूसरों से अच्छे से बर्ताव करनी चाहिए। दूसरों को सम्मान और प्यार देना चाहिए। तभी लोग हमे पसंद करेंगे और अपनाएंगे। पर हमे कोई ये नहीं सिखाता कि हमे खुद को भी पसंद करना चाहिए, खुद से प्यार करना चाहिए।

*ख़ुद से दिल लगा कर खुद से प्यार करके देखिये शायद दुःख कम हो जाए।*

*स्वयं से प्यार करना सीखिए, क्योंकि आप ही वह हैं जो हर रोज अपनी ज़िंदगी के दर्पण में देखते हैं।*

क्या है यह खुद को प्यार करना ? खुद से प्यार करने का तात्पर्य है कि खुद का सम्मान करना और खुद को स्वीकार करना।

**आत्म प्रेम क्यों जरुरी है?**

ये हमारे अंदर सकारत्मक सोच की मानसिकता बनायी रखती है। हम ज्यादा सकारात्मक रह पाते हैं। जो लोग दुखी रहते हैं या आत्मन्यूनता की भाव से गुज़र रहे होते हैं, उनके लिए यह एक औषधि का काम करता है। आत्म प्रेम उन्हें अपनी तकलीफों से छुटकारा दिलाता है।

अगर हम यह चाहते हैं कि लोग हमे प्यार करें, तो पहले हमे खुद को प्यार करना होगा। क्योंकि हम अपने जीवन में वही आकर्षित करेंगे जो हम चाहते हैं। इसिलए खुद से प्यार करना होगा।

लोग खुद से प्यार क्यों नहीं कर पाते? इसके कई कारण हो सकते हैं। आम तौर पर आजकल के समय में खुद को कम समझना, नकारात्मक रूप से समझना बहुत ही सहज बात हो चूकी है। अगर कोई खुद को प्यार करता है तो उसे खुदगर्ज कहा जाता है, पर यह सच नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि साधारण रूप में लोग मानने लगे हैं कि खुद को दूसरों से तुलना करना और खुद से प्यार ना करना ही अच्छी

बात है। हर कोई एक दूसरे से प्रतियोगी के रूप में पेश होता है, खुद को बेहतर बनाने के लिए और यही बात बाद में उन्हें अपने आप पर घृणा उत्पन्न करा देता है।

बचपन में जो परवरिश की जाती है वह भी एक कारण होती है । अगर किसी बच्चे को बचपन में प्यार और प्रोसाहन मिला हो तो वह बच्चा खुद को लायक समझता है । वह खुद को पसंद करने लगता है और दूसरों को प्यार के काबिल समझता है । पर अगर बच्चे को बचपन में उतना प्यार न मिले और दूसरों से डांट, फटकार और तुलना ही मिली हो तो वह खुद को अच्छा नहीं समझता । बड़ा होने के बाद अगर उसे प्यार मिले तो भी अबचेतन रूप से यही समझता है की वह इसके लायक नहीं है ।

जीवन में हो रही बुरी घटनाएं भी और एक कारण बन जाती हैं। जब किसी के साथ बार-बार बुरा होता जाता है, तब वह सोचने लगता है कि शायद वह इतना अच्छा नहीं है, उसकी किस्मत अच्छी नहीं है। अगर वह अच्छा होता तो उसके साथ बुरा क्यों होता। वह अपने आप को नीच समझने लगता है। पर अच्छी बात यह है कि हम इस व्यक्तित्व को बदल सकते हैं। चाहे हालात कैसी भी हो, चाहे कितना भी कठिन जीवन हो, हर स्थिति सुधर जाती है। हमें समझना है कि कुदरत किसी भी चीज को ऐसे बेकार नहीं बनाती है, बहुत खास हैं हम, इसीलिए अपनी नजरिया बदल कर हमें खुद से प्यार करना सीखना है।

**खुद से प्यार कैसे करें?**

जैसे रोशनी देने से पहले दिया जलाना जरुरी है उसी तरह दूसरों से प्यार और सम्मान पाने से पहले, खुद को प्यार और सम्मान करना जरुरी है। कुछ बातों पर ध्यान दे कर आप खुद से प्यार करना सीख सकते हैं, जो अन्य बातों की तरह अभ्यास से प्राप्त किया जा सकता है।

*खुद से जब प्यार करने लगी...*
*ये दुनिया और खूबसूरत लगने लगी।*

इस अभ्यास के लिए हमें इन बातों को जानना जरूरी है। महान लेखक और विश्व प्रसिद्ध आलोचक **खलील जिब्रान** ने खूब कहा, "*भगवान ने कहा अपने दुश्मन से प्यार करो, मैंने उनकी आज्ञा मानी और स्वयं से प्यार किया।*"

**खुद की कमियों और खूबियों को जानें**

यह बहुत जरूरी है। हर इंसान में कुछ खूबियां और कुछ कमियां होती हैं। अपनी कमजोरियों को मानने में कोई बुराई नहीं है। तभी उन्हे ठीक किया जा सकता है। आपको चाहिए कि अपनी कमी को जान कर उसपर काम करके आप खुद का ही बेहतर संस्करण बन सकते हो। उसी तरह हर इंसान में खूबियाँ होती हैं। उसपर काम करते हुए अपनी काबिलियतों को और भी निखारना होगा। इससे आपका आत्मविश्वास बढ़ता है और आप अपने को विकसित कर सकते हैं।

*यदि आप स्वयं से सच्चा प्यार करते हैं,*
*तो यह तय है कि आप कभी दूसरों को भी दुख नहीं दे सकते*

**अपने अतीत की गलतियों से बाहर निकलें और आगे बढ़ें।**

हर इंसान के साथ कुछ न कुछ बुरा घटा ही होता है। कई लोग इस अतीत के दुखो में घिरे रहते हैं। पहले तो अतीत के उस घटना को स्वीकार कर लें। जो हो गया सो हो गया, उसे आप बदल नहीं सकते। इसे स्वीकार कर आगे बढ़ जाएँ और यह सोचें कि वर्तमान को कैसे बेहतर किया जा सकता है, क्योंकि इंसान को अपने वर्तमान पर ही पूरा काबू है। इसीलिए खुद को अतीत के दुखो में डूबने न दें। आज यानी वर्तमान में जीना सीखें और एक सुनहरे जीवन का निर्माण करें।

*अपने जीवन से प्यार करो जिंदगी,*
*खुद आपसे प्यार करने लगेगी*

**जो आपको नीचा दिखाते हैं, उन लोगों से दूरी बनाएं**

हम उन लोगों के ही गुण पाते हैं जिनके साथ हम ज्यादा समय बिताते हैं। अगर कोई आपको हमेशा बुरा बोलता है, आपको किसी लायक नहीं समझता तो आप कहीं न कहीं खुद को ऐसा समझने लगोगे। वैसे ही अगर कोई आपको प्रोत्साहित करता है, आपमें सकारात्मकता देखता है तो आप का आत्मविश्वास बढ़ेगा। इसीलिए खुद को बुरे विचार फैलाने वाले लोगों से दूर रखें।

**अपना ध्यान रखना**

किसीको खुश करने के लिए हम अच्छे से तैयार होते हैं, अपनी हालत पर ध्यान देते हैं, पर जब कोई नहीं होता तो हम अपना बिलकुल ध्यान नहीं करते हैं। हम जैसे रहते हैं, जो खाते हैं उससे हमारे मूड पर असर होता है। इसलिए अपनी सेहत, भोजन आदि पर ध्यान दें जिससे आप अच्छा और आत्मविश्वास महसूस करेंगे और आपका मानसिकता भी अच्छी रहेगी। साथ - साथ व्यायाम , ध्यान और प्राणायाम पर भी ध्यान दें जिससे आप फ्रेश फील कर सकते हैं

*शक़्ल खूबसूरत रहे न रहे, शख्सियत खूबसूरत होनी चाहिए..!*
*कोई आपसे प्यार करे न करे, आपको खुद से प्यार होना चाहिए..!!"*

**नकारात्मक बातें बोलना छोड़ें**

हम कई बार खुद के बारे में नकारात्मक बातें बोलते रहते हैं - *मेरे से नहीं होगा, में उतना लायक नहीं हूँ, मैं उतना अच्छा नहीं* दिखता। यही बातें हमें कमजोर बनाती हैं और हमें डराती रहती हैं। इसलिए नकारात्मक स्वयं पेशी की आदत छोड़ें। जीवन की बुरी घटनाओं पर ध्यान देते रहना हम इंसानों की बुरी आदत है। इससे हमें ऐसा लगेगा जैसे जीवन में कुछ अच्छा नहीं है। पर ऐसा कभी हो ही नहीं सकता। हर किसी के जीवन में कुछ न कुछ अच्छा तो होता ही है। बस हमें अपनी नजरिए को बदलने की देरी है। अच्छी चीजों पर ध्यान दें, उनसे खुश रहें और कुदरत को धन्यबाद दें। इसीलिए जो आपके पास है उससे खुश होना सीखें। जितना आप धन्य महसूस करेंगे, उतना ही आप की खुशी और बढ़ेगी।

*खुश रहना हो तो अपनी फितरत में एक बात शुमार कर लो*
*ना मिले कोई अपने जैसा तो खुद से प्यार कर लो*

**खुद की आलोचना ना करें**

सबसे बड़ी गलती हम करते हैं वह है खुद की आलोचना करते रहना। बार-बार अतीत की गलतियों को लेकर दुखी होते रहना, और खुद को बुरा बोलते रहना ठीक नहीं है। जब हम बार-बार खुद की आलोचना करतें हैं तब हम अपनी नज़रिए से गिर जाते हैं। इसीलिए हम अपने आपको पसंद नहीं करते हैं। कोई भी इंसान निष्कलंक या अति उत्तम नहीं होता। खुद की गलतियों से सीखें, पर खुद को दोष न देते रहें। खुद की अच्छाईयों की लिस्ट बनायें और खुद को अपनी अच्छाइयों की याद दिलाते रहें। इससे आपका आत्म विश्वास बढ़ेगा और आप खुद से प्यार करना सीखेंगे।

*"जिसे खुद से प्यार हो जाता है उसका कोई प्रतिद्वंदी नहीं होगा।"*

**खुद को समय दें**

दिनभर दूसरों के बारे में सोचते रहने के बगैर अगर आप खुद के लिए समय निकाल रहे हैं तो यह आत्म प्रेम की निशानी है। अगर आप अपने पसंद और नापसंद पर ध्यान देते हैं तो इसका अर्थ है कि आप खुद से बहुत प्यार करते हैं। अपने पसंद की चीजें करें, उनका आनंद उठाएं।

**अपनी प्रतिभा को निखारें**

हर इंसान में कोई न कोई टैलेंट अवश्य होता है। अगर आप भी टैलेंटिड हैं और आपको इसकी जानकारी है तो उसे पॉलिश करना ज़रूरी है। खुद की प्रतिभाओं के प्रति बेहद सचेत रहें। अपने आप से अच्छा बॉड रखें और हमेशा अपने लक्ष्यों को निर्धारित करते हुए आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करते रहें।

**बॉडी को फिट रखना**

जो लोग खुद से प्यार करते हैं वे हमेशा अपने खान पान का पूरा ख्याल रखते हैं। इसके अलावा शरीर में मोटापा बढ़ने या पतलापन आने से खुद को दूर रखते हैं। अतः फिटनेज़ पर बहुत ध्यान दें।

**टॉक्सिक लोगों से दूर रहें**

हमारे इर्द गिर्द ऐसे बहुत से लोग होते हैं, जो हमारा मनोबल गिराने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। अगर आप खुद से प्यार करते हैं तो इन लोगों से दूरी बनाएं क्योंकि ऐसे लोगों के साथ में आपकी मेंटल हेल्थ धीरे- धीरे खराब होने लगती है। ऐसे लोग अक्सर आपको अंदर से कमज़ोर बनाने लगते हैं। इसलिए उनसे दूर रहें।

**निष्कर्ष**

अनुभव में देखा गया कि जिसे कोई प्यार नहीं करता यदि वह व्यक्ति स्वयं से प्यार करने लग जाये तो एक दिन ऐसा आता है कि उसे सब प्यार करने लगते हैं! समस्या एकांत वास नहीं है। समस्या है नकारात्मकता। सदैव सकारात्मकता को स्वीकार करें! जिस जिन आपने स्वयं से प्यार करना सीख लिया! समझ लो आप राजा बन गए। अंतिम विजय आपकी तय है! स्वयं से प्रेम करने वाले को कोई हरा नहीं सकता है।

*प्यार स्वयं से करो, संतोष मिलेगा,*
*प्यार श्याम से करो, शांति मिलेगी..!*
*प्यार परिवार से करो प्यार मिलेगा,*
*प्यार काम से करो सफलता मिलेगी*

हमारे जीवन में कई लोग और रिश्ते आते और जाते हैं। पर अगर कोई हमारे साथ रहता है जीवन भर तो वह है हम खुद। जब से आप हो और जब तक आप रहोगे, आप के साथ आप ही रहोगे। इसीलिए खुद से प्यार करना सीखें और खुद को स्वीकारें।

*प्यार अच्छी चीज है' यदि स्वयं से हो*
*जिसके स्पर्श से स्वयं से प्यार हो जाये, तुम उसी स्पर्श की पराकाष्ठा हो*
*उस स्वयं से हमेशा करो प्यार, और जीवन में होंगे अनेकानेक चमत्कार।।।*

---

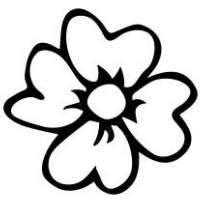

# डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी का बढ़ता खतरा

**मनु शिवशंकर**
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर, बिजली विभाग,मुख्यालय

आजकल दुनिया भर में डिजिटल पेमेंट धोखाधड़ी के मामले बढ़ते जा रहे हैं। भारत में, डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी की संख्या वित्त वर्ष 2023 में लगभग दो गुनी होकर 6,659 हो गई, जो वित्त वर्ष 2022 में 3,596 थी। धोखाधड़ी की कुल राशि भी बढ़ गई। इस चिंताजनक प्रवृत्ति से व्यवसायों और उपभोक्ताओं को एक चेतावनी मिली है कि वे खुद को डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी से बचाने के लिए वे अपनी प्रणाली को और सुदृढ़ बनाएं।

**डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी क्या है?**

डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी कोई भी धोखाधड़ी वाली गतिविधि है जिसमें डिजिटल भुगतान विधियों में, जैसे क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड और ऑनलाइन बैंकिंग का उपयोग शामिल होता है। इस प्रकार की धोखाधड़ी में व्यक्तियों, व्यवसायों या वित्तीय संस्थानों को धोखा देने के लिए डिजिटल लेनदेन की सुविधा का लाभ उठाया जाता है।

**डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी के प्रकार:**

**फ़िशिंग**: यह एक प्रकार का घोटाला है जहां धोखेबाज ईमेल या टेक्स्ट संदेश भेजते हैं जिसको देखने पर लगता है कि यह बैंक या भुगतान प्रदाता जैसे वैध स्रोतों से ही आया है। ईमेल या टेक्स्ट संदेशों में लिंक होते हैं, जिनपर क्लिक करने के लिए कहा जाता है और क्लिक करने पर धोखाधड़ी वाली वेबसाइट पर रीडायरेक्ट किया जाता है । इसका डिजाइन वास्तविक वेबसाइट की तरह ही होता है। इसके बाद पीड़ित अपनी व्यक्तिगत जानकारी धोखाधड़ीवाली वेबसाइट पर दर्ज कर देता है तो बस हो जाता उसका सत्यानाश।

**कार्ड क्लोनिंग:** इसमें धोखेबाज पीड़ित के क्रेडिट या डेबिट कार्ड से जानकारी की प्रतिलिपि बनाते हैं और इसका उपयोग अनधिकृत खरीदारी करने के लिए करते हैं। इसके लिए एक स्कीमर का उपयोग किया जाता है। स्कीमर एक ऐसा उपकरण है जिसे कार्ड की जानकारी चुराने के लिए कार्ड रीडर से जोड़ा जाता है।

**चालान धोखाधड़ी:** इसमे धोखेबाजों से पीड़ितों को चालान भेजे जाते हैं जो वैध व्यवसायों के चालान जैसे दिखते हैं। चालान में अक्सर नकली खाता संख्या या रूटिंग नंबर होते हैं, इसलिए जब पीड़ित चालान का भुगतान करता है, तो पैसा धोखाधड़ी करने वालों के पास चला जाता है।

**खाता अधिग्रहण और अनधिकृत लेनदेन:** खाता अधिग्रहण में, साइबर अपराधी कमजोर पासवर्ड या सुरक्षा प्रणालियों में कमजोरियों का पता लगाते हैं और इसका फायदा उठाते हुए व्यक्तियों के ऑनलाइन खातों तक अनधिकृत रूप से पहुंचते हैं।

**डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी के कारण**

**डिजिटल लेनदेन में वृद्धि :** जैसे-जैसे अधिक लोग और व्यवसाय सुविधा और दक्षता के लिए डिजिटल भुगतान विधियों को अपनाते हैं वैसे ही लेनदेन की मात्रा में काफी वृद्धि होती है। इससे साइबर अपराधियों को अधिक अवसर प्राप्त होते हैं।

**धोखेबाजों की बढ़ती परिष्कार**: साइबर अपराधी धोखाधड़ी करने में सक्षम बनते जा रहे हैं। नित्य नए तरीको की तलाश में रहते हैं ताकि डिजिटल भुगतान प्रणालियों की कमजोरियों का फायदा उठाकर मुनाफा कमाते रह सके।

**जागरूकता की कमी**: कई उपभोक्ता डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी के जोखिमों से अनजान हैं , क्योंकि कई जगहों पर इसे अत्यावश्यक बनाया गया है इसलिए वे न चाहते हुए भी इसे अपना रहे हैं लेकिन कुछ नया सीखने के उत्सुक नहीं हैं। इसलिए धोखा खाते हैं।

**अपर्याप्त सुरक्षा उपाय:** प्रौद्योगकी तो तेजी से विकसित हो रही है लेकिन सभी डिजिटल भुगतान प्लेटफार्मों और सेवाओं ने मजबूत सुरक्षा उपायों को नहीं अपनाया है। कमजोर पासवर्ड, मल्टी-फैक्टर प्रमाणीकरण की कमी और पुराने सुरक्षा प्रोटोकॉल आदि साइबर अपराधियों के कारनामों को और भी बढ़ावा देते हैं।

**हल कैसे:**

**जनता को शिक्षित करना:** सरकार इस दिशा में काम करती है। जनता को डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी के खतरों से खुद को सुरक्षित रखने के बारे में शिक्षित करती है। जनता में जागरूकता फैलाने के लिए अभियान और अन्य आउटरीच प्रयास कर सकती है।

**मजबूत प्रमाणीकरण विधियाँ:** मल्टी-फैक्टर प्रमाणीकरण (एमएफए), बायोमेट्रिक सत्यापन और टोकनाइजेशन जैसी मजबूत प्रमाणीकरण विधियों को अपनाया जा सकता है। लेनदेन मामलों में एमएफए को अनिवार्य बनाना होगा।

**कानूनी ढांचे को मजबूत करना:** साइबर अपराधों को संभालने के लिए कानूनी ढांचे को लगातार अपडेट करते रहना है और उसे और सुदृढ़ बनाना है। संबंधित कानून को और भी प्रासंगिक बनाना होगा।

**अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** सीमापार साइबर अपराधों के मामलों में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। खुफिया जानकारी साझा करने, साइबर खतरों के बारे में जानकारी शेयर करने और साइबर आपराधिक नेटवर्क की संयुक्त रूप से जांच करने के लिए अन्य देशों के साथ सहयोग स्थापित करना अति आवश्यक है।

**निष्कर्ष**

डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी का बढ़ता खतरा एक जटिल समस्या है जिसके लिए सभी उपयोगकर्त्ताओं से सहयोग अपेक्षित है। सरकार जनजागरूकता के लिए कई अभियान चलाई जा सकती है ताकि हितधारक सतर्क रहे। हालाँकि, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि धोखेबाज डिजिटल भुगतान की कमजोरियों का फायदा उठाने के लिए हमेशा नए तरीके खोजेंगे, अतः उपभोक्ताओं को सदैव ही रोकथाम युक्तियों पर अपने आप को अपडेट रखना है।

---

# विचारों का बिखराव

**वी. जयश्री**
कार्यालय अधीक्षक,इंजीनियरी विभाग, मुख्यालय

मानसिक भावनाओं व खयालों को दो मुख्य भागों में विभाजित किया जाता है।

1. सुख, संतोष व आनन्द
2. दुख, उदास व दर्द

विस्तार से देखा जाए तो हँसना, मुस्कुराना, नाचना, कूदना, गाना आदि सुख व आनंद का अहसास देते हैं। गुस्सा करना, घृणा होना, ईश्या होना, रोना आदि दुखी व उदास होने का अहसास देते हैं। हम जिन्दगी में कभी खुशी, कभी गम का अनुभव करते हैं। सुख व संतोष में अत्यधिक सुखी और संतुष्ट होना सही है, स्वाभाविक है और इसमे कोई गलती नहीं है । लेकिन संतोष के अवसरों में आप इतना सुखी न हो जाएं कि दूसरों को नीच समझने लगे, यह अत्यंत गलत है क्योंकि सुख और दुख एक साइकिल जैसे हैं। आज आपकी बारी है तो फिर कभी दूसरों की बारी भी आएगी, इसे कभी नहीं भूलना होगा। सुख के समय संतुष्ट होकर दूसरों को नीचा दिखाया तो कौन जाने, जिनको हमने नीचा दिखाया था, वे अपने खुशी के समय में हमें तुच्छ समझ सकते हैं। इससे हमें ठेस पहुंच सकती है और यह भयंकर जाल फैलता रहेगा जिसका कोई अंत ही नहीं होगा। इसलिए हमें सुख-दुख दोनों अवसरों पर संतुलित रहना अत्यंत जरूरी है।

उदाहरण के रूप पर अगर कोई विद्यार्थी अपने कठिन परिश्रम के फलस्वरूप आई.आई.टी. नीट जैसी कठिन परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो जाता है तो सहज है कि वह अत्यंत खुश महसूस करता हो, लेकिन इसी बहाने वह किसी दूसरे को जिसने परीक्षा दी थी। लेकिन सफल नहीं हुआ, को तुच्छ समझने लगता है तो वह बहुत बुरी है, क्योंकि शायद हम एक परीक्षा में पास हो गए लेकिन जीवन ही परीक्षा है और उसमें तो हमें सदैव ही परीक्षा का सामना करना ही है। हम किसमें पास होंगे और किसमें फेल होंगे, यह कौन जानता है।

इसलिए हमें हमेशा ही संतुलित रहना पड़ेगा। जैसे- भगवान श्रीकृष्ण ने "भगवत गीता" में बताया है कि सुख और दुख को एक जैसे मानना है और उसका सामना करना है। हालांकि इसका पालन करना हम जैसे मामूली व्यक्तियों के लिए बहुत मुश्किल है, लेकिन प्रयास करने में क्या हर्ज है ?

**समदु:खसुख: स्वस्थ: समलोष्टाश्मकाञ्चन: |**

**तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुति: || श्रीमद् भगवद्गीता 14 - 24||**

**मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयो: |**

**सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीत: स उच्यते || || श्रीमद् भगवद्गीता 14 . 25||**

---

# दुनिया की सैर

**एस.बालसुब्रमणियन**
वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

लेख के शीर्षक को देखते ही आप सुधी पाठकों के मन में विचार दौड़ते होंगे कि चलो हम इसी बहाने दुनिया की सैर कर लेंगे। हां, ***जहां चाह है वहां राह है -Where there is a will there's a WAY***

सैर करने के लिए हमें यातायात के साधनों की जरूरत है। यातायात के तरीके, आप जानते ही होंगे कि रेल मार्ग, वायु मार्ग, जल मार्ग तथा सडक मार्ग। यातायात के इन तरीकों के जरिए ही हम एक जगह से दूसरी जगह तक जा सकते हैं और हम पहले सड़क यातायात के बारे में कुछ बातें जानेंगे।

दुनिया के सबसे बड़े सड़क नेटवर्कों में से एक है भारत का सड़क नेटवर्क जो देश के दूर-दराज के इलाकों को आपस में जोड़ता है और भारतीय रेल विश्व स्तर पर सबसे बड़े रेलवे नेटवर्क में से एक है तथा भारत में विमानन क्षेत्र में भी तेजी से विकास हुआ है। इसके अलावा नदियों, नहरों के जलमार्गों का भी उपयोग अंतर्देशीय और तटीय नेविगेशन, व्यापार और परिवहन के लिए किया जाता है।

यह अलग बात है कि पेट्रोलियम उत्पादों, प्राकृतिक गैस और अन्य गैस पदार्थों के परिवहन के लिए पाइपलाइनों का उपयोग किया जाता है।

यात्रा करना कब, कहां और कैसे शुरू हुआ है यह जानना जरूरी है। जब मनुष्य ने इस भूमि में जन्म लिया तब से उसने एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए एक 'रास्ता' को अपने आप पहचाना और उसका विकास होता गया। आप इस चित्र को देखिए यह मनुष्य द्वारा पैदल चलते चलते बना एक रास्ता है इसको Cart Track

(Vandi/Nadai Pathai) कहा जाता है और यह एक कच्चा रास्ता है। तकनीकी विकास के कारण ग्रामीण सडक, शहरी सडक, जिला सडक, राज्य राजमार्ग, राष्ट्रीय राजमार्ग, एक्सप्रेस-वे आदि में अच्छी प्रगति हुई है।

राजा महाराजा के दिनों में राजमहल से बाहर आने-जाने के लिए पालकी या डोली का उपयोग हो रहा था जिसके जरिए राजमहल में स्थित लोगों ने अपने परिवहन संबंधी मांगें पूरी कीं। आज इस आधुनिक काल में भी आप ऊपर चित्र में देख सकते हैं कि भारत की कुछ जगहों पर आज भी पालकी या

डोली या टट्टू सवारी का उपयोग किया जा रहा है। **केदारनाथ, बद्रीनाथ, अहोबिलम** और अन्य पहाडी क्षेत्रों में जहां पक्का रास्ता नहीं है और यातायात के साधनों का उपयोग करना नामुमकिन है वहां इन्ही साधनों पर ही निर्भर करना पडता है।

जब आर्काट नवाब मुहम्मद अली ख़ान वालाजा ने अपनी राजधानी आर्काट से मद्रास को स्थानांतरित कर दी तब से आर्काट से चेन्नै आने-जाने का रास्ता आर्काट रोड नाम से प्रसिद्ध हुआ और उन्होंने फोर्ट सेंट जॉर्ज के पास एक मशहूर राजमहल बनाया और वहां के सडक को आज भी वालाजा रोड कहा जाता है और हमारी दक्षिण रेलवे के एक रेलवे स्टेशन का नाम भी वालाजा रोड रेलवे स्टेशन है।

इस तरह हम अंग्रेजी शासन काल के बहुत सारे ऐसे सुप्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम देखेंगे जिनके नाम पर गली, सडक आदि हैं।

- एलिस रोड - मद्रास में गवर्नर-इन-काउंसिल के दूसरे सदस्य फ्रांसिस एलिस ।
- जेरेमिया रोड - जॉन जेरेमिया मद्रास के एक प्रमुख वकील ।
- रिथरडन रोड - ऑगस्टस रिथरडन मद्रास स्टाफ कोर के मेजर-जनरल।
- विलियम्स स्ट्रीट - मद्रास में सुप्रीम कोर्ट के उप रजिस्ट्रार जे.ए.एस.विलियम्स।
- फ़िप्स रोड - लोकोमोटिव अधीक्षक, पेरंबूर लोको वर्क्स
- पिलकिन्टन रोड – उप लोकोमोटिव अधीक्षक, पेरंबूर लोको वर्क्स
- मेडली रोड – चेन्नै कॉर्पोरेशन के इंजीनियर

कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों के नामों में भी कुछ सडकों के नाम चेन्नै में हैं जैसे मुहम्मद हबीबुल्लाह रोड, भारतियार स्ट्रीट, औवैयार स्ट्रीट, तिरुवल्लुवर स्ट्रीट, राधाकृष्णन सालै, एन.एस.सी.बोस रोड, जवाहरलाल नेहरू रोड,सरोजनी स्ट्रीट, उत्तमर गांधी रोड, जानी जान खान रोड, अण्णा सालै, कामराज स्ट्रीट,महाराजपुरम संतानम स्ट्रीट, गोविन्द अप्पन स्ट्रीट आदि।

आईए हम सब इन गलियों/सडकों आदि को आसानी से ढूंडने के लिए किस तरह तकनीकी विकास का मदद ले सकते हैं, इसके बारे में कुछ जानें ।

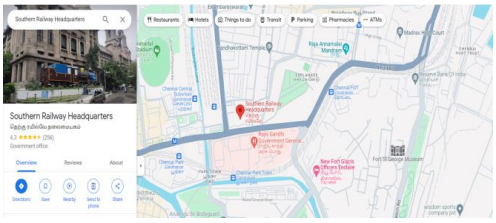


आप जानते ही होंगे कि मैं **गूगल-मैप** और **गूगल-एर्थ** तथा अन्य तकनीकी साधानों/एपों के बारे में कह रहा हूं। मैं दक्षिण रेलवे के मुख्यालय के राजभाषा संगठन में काम करता हूं और मुझे यहां से दूसरी जगह या कोई चीज ऑन-लाइन में खरीदनी या और किसी दूसरे कारण के लिए मेरा लोकेशन शेयर करना है तो मैं तुरंत गूगल-मेप में जाऊंगा और मेरा लोकेशन उन्हें शेयर करूंगा और इस लोकेशन का चित्र इस प्रकार होगा।

गाड़ी बुकिंग करने के लिए ओला, ऊबर, रेपिडो जैसे ऐप उपलब्ध हैं और इनके जरिए मैं अपनी यात्रा , अपने ऑफिस में हो या अन्यत्र कहीं से भी बुक कर सकता हूं। इसके पीछे जो रहस्य है मैं आपको शेयर करना चाहता हूं।

## गूगल-मैप/गूगल-एर्थ/ग्लोबलपोजिशनिंग सिस्टम(GPS)

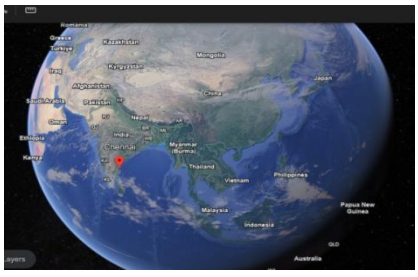

अक्षांश निर्देशांक(Latitude coordinates) भूमध्य रेखा से उत्तर और दक्षिण की दूरी मापते हैं। देशांतर निर्देशांक (Longitude coordinates) प्रधान मध्याह्न रेखा से पूर्व और पश्चिम की दूरी मापते हैं। तकनीकी विकास के कारण हम घर बैठे मोबाइल/लैपटाप या किसी भी प्रकार के उपकरण के जरिए पूरी दुनिया की जगहों को देख सकते हैं। उदाहरण के लिए मेरे रिश्तेदार का लड़का जो आंध्र प्रदेश से

मुझे देखने चेन्नै आया और वह वंडलूर चिड़ियाघर देखना चाहा। मगर समय के अभाव के कारण जा नहीं पाया। मैने उसे एक आइडिया बताया कि तुम अपने मोबाइल/लैपटाप के जरिए पूरी दुनिया के चिडियाघर देख सकते हो। इसके लिए मैने कुछ वेबसाइट के नामों का भी सुझाव दिया जहां हम सभी लाइव स्ट्रीमिंग देख सकते हैं।

आजकल घर बैठे ही हम दुनिया की सैर कर सकते हैं। अस्सी दिनों में क्या , एक ही दिन में दुनिया की सैर की जा सकती है। दुनिया मुट्ठी में आ गई है। यह सब विज्ञान की करामात है।

*****

# जयशंकर प्रसाद

**एन. चित्रा**
**वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय**

जयशंकर प्रसाद जी ने हिन्दी साहित्य के जगत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्हे एक प्रसिद्ध कवि के अलावा, मशहूर कहानीकार, उपन्यासकार और नाटककार के रूप में भी जाना जाता है। इन्होंने अनेक कहानियाँ, कवितायें, निबन्ध एवं नाटकों की रचना की। उनके प्रसिद्ध काव्य कामायनी को आधुनिक हिंदी साहित्य का बेजोड एवं सिरमौर साहित्यिक कृति माना जाता है।

**जन्म और शिक्षा**

जयशंकर प्रसाद जी का जन्म 1889 को उत्तरप्रदेश राज्य के काशी के वाराणसी में हुआ था। इनके पिता का नाम देवीप्रसाद तथा माता का नाम मुन्नी देवी था। देवीप्रसाद तम्बाकु के व्यापारी थे। इनके बारह वर्ष की आयु में ही इनके पिता श्री देवीप्रसाद का स्वर्गवास हो गया। उस समय प्रसाद जी सातवीं कक्षा के छात्र थे। पंद्रह वर्ष की अवस्था में माता तथा सत्रह वर्ष की अवस्था में इनके भाई का देहान्त हो जाने के कारण घर-परिवार और व्यापार का सारा बोझ इन्हीं पर आ पड़ा। अतः इनकी आगे की शिक्षा घर पर ही हुई।

घर में इन्होंने संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, फारसी तथा उर्दू भाषा का ज्ञान ग्रहण किया था। इनके पिता के काल से ही अनेक कवि और कलाकार उनके घर अक्सर आया करते थे। इसी कारण जयशंकर प्रसाद को भी बचपन से ही कविता के प्रति रुचि जाग उठी थी। वे जीवन की कठोरताओं, विषमताओं से संघर्ष करते हुए अंत तक साहित्य-साधना करते रहे।

**जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक कार्य एवं प्रसिद्ध रचनाएं**

छायावादी कवि प्रसाद जी को प्रकृति से अपार प्रेम था । इनकी सभी गद्य-पद्य रचनाओं में भारतीय संस्कृति की झलक मिलती है। प्रसाद जी ने हिंदी साहित्य में नवीन युग की चेतना का प्रादुर्भाव किया। इन्होंने अपनी प्रतिभा के बल से अपने काव्य के क्षेत्र में मौलिक परिवर्तन किया।

प्रसाद ने प्रारंभ में व्रजभाषा में कविताएं की थीं। उपलब्ध स्रोतों के आधार पर प्रसाद जी की पहली रचना 1901 ई॰ में लिखा गया एक सवैया छंद है, लेकिन उनकी प्रथम प्रकाशित कविता दूसरी है जिसका प्रकाशन जुलाई 1906 में 'भारतेन्दु' में हुआ था। 'प्रेम-पथिक' का महत्त्व प्रसाद की व्यापक और उदार दृष्टि, सर्वभूत हित कामना, समता की इच्छा, प्रतिपद कल्याण करने का संकल्प, प्रकृति की गोद में सुख का स्वप्न आदि के बीजभाव के कारण तो है ही, प्रसाद ने प्रेम के अनुभूतिपरक अनेक रूपों का जो वर्णन किया है उसके कारण भी है।

इन्होंने अपनी कविताओं में नारी को केवल नायिका के रूप में न देखकर त्यागमयी, बहिन तथा श्रद्धामयी माता के रूप में देखा। उन्नीस वर्ष की अवस्था से ही इन्होंने ऐतिहासिक खोजों तथा रचनाओं का प्रारंभ कर दिया था। इन्होंने समर्पण भाव से हिन्दी साहित्य की सेवा की।

'करुणालय' का प्रकाशन 1913 ई॰ में 'इन्दु' में हुआ था। स्वयं प्रसाद जी ने इसे गीतिनाट्य के ढंग पर लिखा गया दृश्य काव्य कहा है। केवल इसके अंत में एक गीतात्मक पद्य है। कविता का अधिकांश अतुकान्त है। इसे गीतिनाट्य की अपेक्षा 'काव्य नाटक' कहना मेरे ख्याल से अधिक उचित है। 1914 ई॰ में 'इन्दु' में प्रकाशित 'महाराणा का महत्त्व' शीर्षक कविता महाराणा प्रताप के साथ अमर सिंह पर भी केन्द्रित है। यह स्वाधीनता प्रेम, पराधीनता के खिलाफ संघर्ष, स्वतंत्रता को हर कीमत पर बनाये रखने के शौर्य और संकल्प की कथात्मक कविता है।

प्रसाद जी की प्रारम्भिक रचनाओं का संग्रह 'चित्राधार' था जिसका पहला संस्करण 1918 ई॰ में प्रकाशित हुआ था; परंतु उनका पहला प्रकाशित काव्य-संग्रह 'कानन-कुसुम' था जिसका प्रथम प्रकाशन 1913 ई॰ में हुआ था। इसके तीसरे संस्करण के विवरण से पता चलता है कि इसके प्रथम संस्करण में उस समय तक रचित प्रसाद जी की खड़ीबोली तथा ब्रजभाषा की कविताएँ भी संकलित थीं। बाद के संस्करण में इसमें केवल खड़ीबोली की कविताएँ रखी गयीं तथा ब्रजभाषा में रचित कविताएँ 'चित्राधार' में संकलित कर दी गयीं। चूँकि 'चित्राधार' में संकलित रचनाएँ कालक्रम से 'कानन-कुसुम' में संकलित रचनाओं से पहले की थीं, इसलिए प्रसाद जी की कृतियों में 'चित्राधार' को पहले और 'कानन-कुसुम' को दूसरे काव्य-संग्रह के रूप में स्थान दिया जाता है। 'कानन-कुसुम' की रचनाओं में संशोधन-परिवर्धन भी बहुत बाद तक होता रहा ।

सन् 1918 ई॰ में प्रकाशित 'चित्राधार' के प्रथम संस्करण में ब्रजभाषा और खड़ीबोली में लिखी 'कलाधर' और 'प्रसाद' छाप की कविताएँ एक साथ संकलित थीं, परन्तु 1928 ई॰ में प्रकाशित इसके दूसरे संस्करण में केवल ब्रजभाषा की ही रचनाएँ रखी गयीं। 'चित्राधार' के प्रथम संस्करण में 'करुणालय' एवं 'महाराणा का महत्त्व' शीर्षक कविताएँ भी संकलित थीं, परंतु 1928 में इन दोनों का स्वतंत्र प्रकाशन हुआ। उर्वशी, बभ्रुवाहन, करुणालय, ब्रह्मर्षि, पंचायत, प्रकृति सौंदर्य, सरोज, भक्ति आदि रचनाओं को 'चित्राधार' के इस परवर्ती संस्करण में निकाल दिया गया। 'चित्राधार' में संकलित कथामूलक भाववाली कविताएँ तीन हैं - 'वन मिलन', 'अयोध्या का उद्धार' और 'प्रेम राज्य'। 'अयोध्या का उद्धार' कालिदास कृत 'रघुवंश' के सोलहवें सर्ग पर तथा 'वन मिलन' 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' पर आधारित है। 'प्रेम राज्य' विजयनगर और अहमदाबाद के बीच हुए तालीकोट युद्ध की ऐतिहासिक घटना को केंद्र में रखकर लिखा गया वीरगाथा काव्य है।

प्रसाद जी की खड़ीबोली की स्फुट कविताओं का प्रथम संग्रह 'कानन कुसुम' है। इसमें सन् 1909 से लेकर 1917 तक की कविताएँ संगृहीत हैं। प्रायः सभी कविताएँ पहले 'इन्दु' में प्रकाशित हो चुकी थीं। यहाँ तक की कविताएँ प्रसाद जी के प्रारंभिक दौर की कविताएं हैं जिनमें काव्य-विकास की अपेक्षा भाव विकास के संकेत ही अधिक उपस्थापित हो पाये हैं।

1918 ई॰ में ही प्रसाद जी के सुप्रसिद्ध संग्रह 'झरना' का प्रकाशन हुआ जिसमें प्रसाद की प्रथम छायावादी कविता 'प्रथम प्रभात' भी प्रकाशित हुई थी। इसमें प्रसाद जी के काव्य-विकास के संधिकाल की गीतिपरक कविताएँ संकलित हैं। आरंभ में इसमें कुल 24 कविताएँ थीं। इसका दूसरा संस्करण सन् 1927 ई॰ में प्रकाशित हुआ, जिसमें आचार्य शुक्ल के अनुसार 33 रचनाएँ और जोड़ी गयीं, जिनमें रहस्यवाद,

अभिव्यंजना का अनूठापन, व्यंजक चित्रविधान आदि सब कुछ मिल जाता है। 'झरना' एक दृष्टि से प्रेम के विविध अनुभवों का जीवन्त वर्णन है। इसके साथ ही इसमें लोकमंगल की भावना और दीन-दुखी तथा दलितों के दुख के अन्त की कामना भी है, जो प्रेम को उदार बनाती है। अनेक समालोचकों के विचार से छायावाद की प्रतिष्ठापक कुछ कविताएँ इस संग्रह में संकलित थीं। इसमें प्रसाद जी के भावी उदात्त काव्य-विकास के संकेत तो प्रभूत मात्रा में मिलते हैं, परंतु जहाँ-तहाँ भाषा का अनगढ़पन, लय का अभाव तथा उदात्तीकरण की न्यूनता रचनात्मक प्रौढ़ता में बाधा बनती भी दिखती है।

प्रसाद जी की काव्य रचना के दूसरे दौर का आरम्भ 'आँसू' से हुआ, जिसका प्रकाशन 1925 ई॰ में साहित्य सदन, चिरगाँव (झाँसी) से हुआ था। 'प्रेम-पथिक' के सन्दर्भ में लिखते हुए डॉ॰ रमेशचन्द्र शाह ने कहा है : "विषय-वस्तु इस कविता की वही है जो इस कवि के साथ एक स्थायी भाव सरीखा महत्त्व रखती जान पड़ती है : अर्थात् मानवीय प्रेम-भावना का दर्शन -- एक अत्यन्त उत्कट वैयक्तिक प्रेमासक्ति का धीरे-धीरे एक आदर्श विश्वव्यापी प्रेमानुभूति में रूपान्तरण।"

प्रसाद जी की सभी कविताएँ असाधारण और दुर्लभ मानी जाती हैं। कविता के अतिरिक्त सशक्त कहानियां और नाटक, उपन्यास और निबंध रचकर इन्होंने आधुनिक हिंदी साहित्य-निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रसाद जी के प्रमुख काव्यः चित्राधार, कानन कुसुम, करुणालय, महाराणा का महत्व, प्रेम पथिक, झरना, आँसू, लहर और कामायनी.

इनके काव्यों में कामायनी एक प्रसिद्ध काव्य है। कामायनी तो पूर्णरूपेण रहस्य एवं दार्शनिकता से ओत-प्रोत है। इन्होंने इसमें अज्ञात प्रियतम से मिलन की आशा दर्शाया है। 'कामायनी' को गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरित मानस' के बाद हिंदी भाषा और विश्व-साहित्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण काव्य माना जाता है। कवि के बाद प्रसादजी का दूसरा सशक्त रूप नाटककार है। इनके नाटकों में वैदिककाल तथा गुप्त काल के कथानक विशेषकर मिलते हैं ।

इनके प्रसिद्ध नाटकः राज्यश्री, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चंद्रगुप्त, विशाख, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ, एक चूंट, परिणय, कल्याणी आदि

इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रहः आकाशदीप, इंद्रजाल, प्रतिध्वनि, आँधी, छाया आदि।

उपन्यासः कंकाल, तितली, इरावती अपूर्ण आदि।

वर्ष 1954 में उन्हें पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस प्रकार प्रसाद जी ने हिन्दी साहित्य का न केवल नवीनीकरण किया, बल्कि उसे समृद्ध भी बनाया।

**देहांत**

वर्ष 1937 में तपेदिक से पीड़ित होकर 48 वर्ष की आयु में जयशंकर प्रसाद जी ने इस दुनिया को छोड़ दिया। भौतिक रूप से तो उनका निधन हो गया है लेकिन वे मृत्यु के बाद भी अपनी रचनाओं के माध्यम से जीवित हैं।

---

# राजभाषा उत्सव समारोह - 2023

# राजभाषा उत्सव समारोह - 2023